بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

विशेषांक

मसीह मौऊद अंक

वर्ष
6

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly
BADAR Qadian
HINDI

अंक
9-10
मूल्य
500 रुपए
वार्षिक

19, 26 रजब 1442 हिज्री क़म्री 4, 11 अमान 1400 हिज्री शम्सी 4, 11 मार्च 2021 ई.

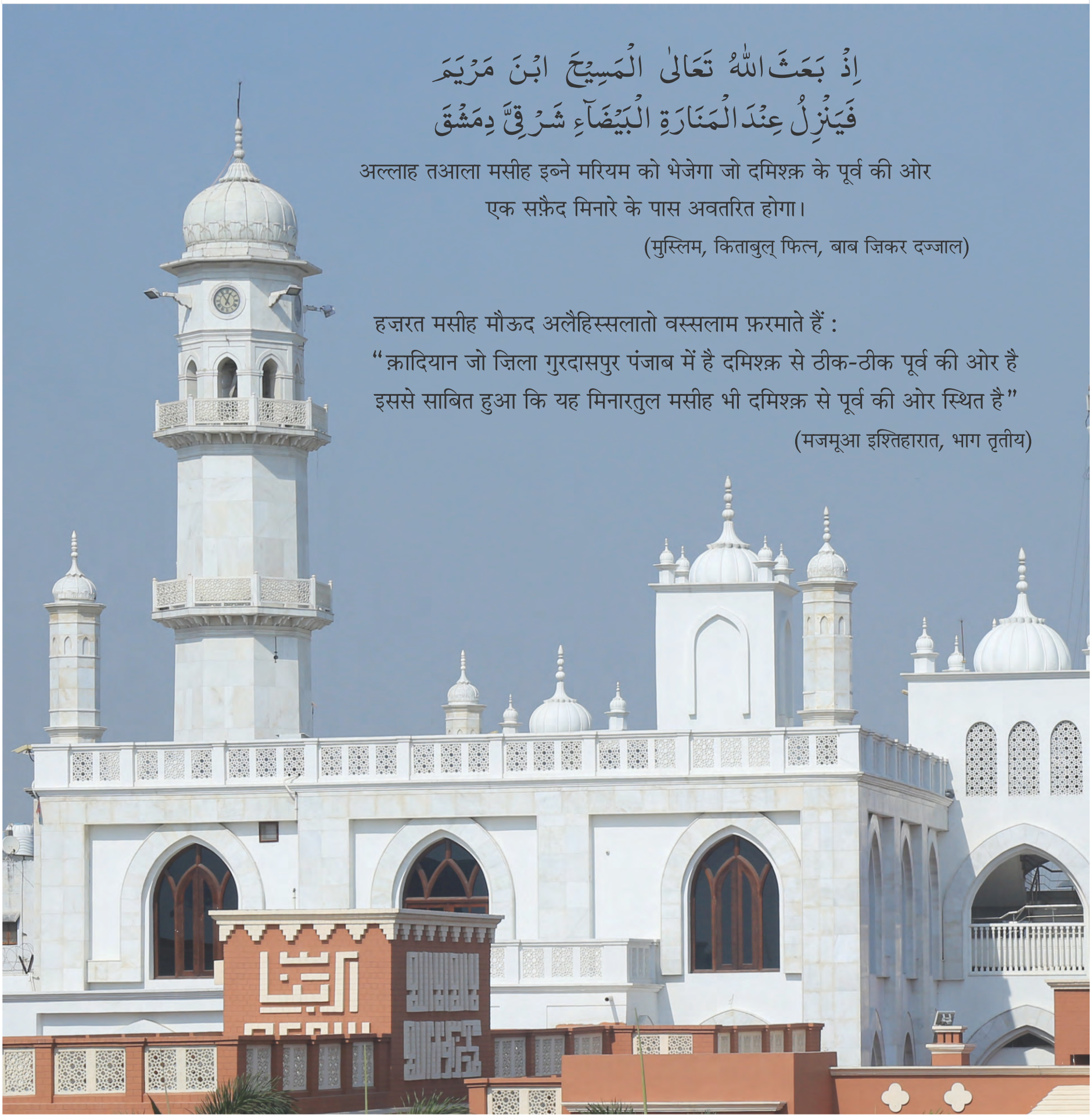

اِذۡ بَعَثَ اللّٰہُ تَعَالٰی الۡمَسِیۡحَ ابۡنَ مَرۡیَمَ
فَیَنۡزِلُ عِنۡدَ الۡمَنَارَۃِ الۡبَیۡضَآءِ شَرۡقِیَّ دِمَشۡقَ

अल्लाह तआला मसीह इब्ने मरियम को भेजेगा जो दमिश्क़ के पूर्व की ओर एक सफ़ैद मिनारे के पास अवतरित होगा।

(मुस्लिम, किताबुल् फित्न, बाब ज़िकर दज्जाल)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं :
"क़ादियान जो ज़िला गुरदासपुर पंजाब में है दमिश्क़ से ठीक-ठीक पूर्व की ओर है इससे साबित हुआ कि यह मिनारतुल मसीह भी दमिश्क़ से पूर्व की ओर स्थित है"

(मजमूआ इश्तिहारात, भाग तृतीय)

मस्जिद अक्सा (क़ादियान)

मस्जिद मुबारक़ (क़ादियान)

बैतुल आफ़ियत (अल्मीरे, हालैंड)

मस्जिद दारुस्सलाम (साऊथ हाल यू.के.)

मस्जिद महमूद (स्वीडन)

मस्जिद बैतुल नसीर (आगसबर्ग, जर्मनी)

मस्जिद बैतुल मुक़ीत (वल्साल, यू.के.)

मस्जिद मुबारक़ (वॉज़बादिन, जर्मनी)

विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया संसार के 213 देशों में स्थापित हो चुकी है अल्हम्दुलिल्लाह।
संसार के विभिन्न देशों में जमाअत अहमदिया की ओर से बनने वाली मस्जिदों के सुंदर चित्र

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

साप्ताहिक हिन्दी बदर मसीह मौऊद[अ.] नम्बर

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इनामी चैलेंज

हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पे बुलाया हमने

اِنَّ السُّمُوْمَ لَشَرُّ مَا فِی الْعَالَمِ شَرَّ السُّمُوْمِ عَدَاوَۃُ الصُّلَحَاءِ

पुस्तक सिर्रुल ख़िलाफ़: (ख़िलाफ़त का रहस्य) की ग़लतियाँ निकालने पर हर ग़लती पर एक रुपया इनाम

इससे पहले हम यह वर्णन कर चुके हैं कि मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक विशेष दुश्मनी थी। उन्होंने बराहीने अहमदिया के रिव्यू में लिखा था और कोई संदेह नहीं कि उन्होंने अपने रिव्यू में बहुत ही कठोर शब्दों में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपकी प्रख्यात लेखनी बराहीने अहमदिया का समर्थन किया था। लेकिन हक़ीक़त यह है कि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्वीकार्यता और बराहीन अहमदिया की प्रसिद्धि के कारण मुहम्मद हुसैन का रिव्यू न था बल्कि बराहीन की प्रसिद्धि के कारण सीधा दिलों में उतरने वाले उस के मज़बूत दलायल थे और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्वीकार्यता का कारण आपकी नेकी और संयम और अल्लाह तआला की ओर से आपके अस्तित्व में रखी गई एक बेपनाह आध्यात्मिक कशिश और एक विशेष आकर्षण था, अतिरिक्त इसके एक बड़ा कारण आप की स्वीकार्यता का यह था कि आप के एक ज़बरदस्त पहलवान और बदले न जा सकने वाले जरनैल थे जिस के सामने किसी को खड़े होने का साहस नहीं होती था। मुहम्मद हुसैन की बदक़िस्मती है कि वह बराहीन की प्रसिद्धि का कारण और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्वीकार्यता का कारण अपने रिव्यू को समझता रहा। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1890 ई में मसीह मौऊद होने का दावा किया तो मुहम्मद हुसैन बिगड़ गया कि मुझ से मश्वरा किए बिना उसने किस तरह मसीह मौऊद होने का दावा कर दिया। लम्बी बहस के बाद उन्होंने लिखा

"(ईशातुस्सुन्ना का फ़र्ज़ और उसके ज़िम्मा यह एक क़र्ज़ था कि उसने जैसा उसको (अर्थात सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को) पुराने दावे के अंतर्गत आसमान पर चढ़ाया था वैसा ही नए दावे के अंतर्गत उसको ज़मीन पर गिरा दे।)"

(तारीख़ अहमदियत भाग 1 पृष्ठ 386)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोध में मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने आपको और अपने रिसाला ईशाअतुस्सुन्ना को वक़्फ़ कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें लिखा कि

"मुझे इससे कुछ ग़म और दुख नहीं कि आप जैसे मित्र विरोध पर हो... कल मैं ने अपने बाज़ू पर यह शब्द अपने लिए लिखते हुए देखा कि मैं अकेला हूँ और ख़ुदा मेरे साथ है। और इसके साथ मुझे इल्हाम हुआ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَھْدِیْنِ - अत: मैं जानता हूँ कि ख़ुदा तआला अपनी तरफ़ से कोई सच और झूठ को प्रमाणित करने वाला प्रमाण प्रकट कर देगा। मैं आपके लिए दुआ करूंगा, परन्तु आवश्यक है कि जो आपके लिए निर्धारित है वह सब आपके हाथ से पूरा हो जाएगी।"

(तारीख़ अहमदियत भाग 1 पृष्ठ 386)

हमें अफ़सोस है कि मुहम्मद हुसैन बटालवी के विरोध का तरीक़ा बहुत तुच्छ और घटिया था। इस में इख़लास नाम की कोई चीज़ नहीं थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोध में मुहम्मद हुसैन समस्त शिष्टाचार की सीमा को फलाँग गए। झूठ का निडर होकर इस्तिमाल किया। उनके झूठे आरोपों में से एक यह भी था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अरबी के ज्ञान और क़ुरआन के ज्ञान से बिल्कुल अपरिचित हैं। इसके

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	विषय सूची	1
2	नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद	2
3	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के कथन	3
4	मिनारतुल मसीह का इतिहास और निर्माण	4
5	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पक्ष में निबंध रचना तथा धार्मिक चर्चाओं के मध्य ख़ुदा तआला का समर्थन और ईमान बढ़ाने वाली घटनाओं का प्रकटन	10
6	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण की भविष्यवाणी की रोशनी में	13
7	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई पूर्व के बुज़ुर्गों की भविष्यवाणियों की रौशनी में	15
8	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई हकम (मध्यस्थ) और अदल (न्यायकर्ता) के रूप में	17

उत्तर में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें क़ुरआन मजीद के मुक़ाबले के लिए तफ़सीर लिखने का चैलेंज दिया। किताब "करामातुस्सादेक़ीन" और "नूरुल-हक़" फ़सीह तथा बलीग़ अरबी में लिखी और इस जैसी किताब लिखने का चैलेंज दिया और इस के लिए भारी भरकम इनाम भी रखे, इसका वर्णन हम पिछले कई शुमारों में कर चुके हैं। इसके बाद सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़सीह तथा बलीग़ अरबी भाषा में किताब "सिर्रुल ख़िलाफ़:" लिखी और इसके लिए सत्ताईस रुपए का उपहार रखा। और इसकी गलतियां निकालने पर हर ग़लती एक रुपया का इनाम रखा। फिर इस इनाम को बढ़ाकर आपने दो रुपये कर दिया। नीचे इस इनामी चैलेंज के संबंध में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान कथन प्रस्तुत हैं। आप अलैहिस्सलाम मुहम्मद हुसैन बटालवी को संबोधित करके फ़रमाते हैं :

अत्यन्त हमदर्दी से पुन: मैं अन्तिम बार दावत देता हूँ और पहली पुस्तकों से निराश हो कर पुस्तक "सिर्रुल ख़िलाफ़त" की ओर शेख़ साहिब को बुलाता हूँ। आपके लिए सत्ताईस दिन की समय सीमा और सत्ताईस रुपये का नक़द इनाम निर्धारित किया गया है और मैं इस पर सहमत हूँ कि यह रुपया आप ही के सुपुर्द करूं यदि आप मांग करें और हम नहीं भेजें तो हम झूठे हैं। हम यह रुपया पहले ही भेज सकते हैं परन्तु आप इक़रार प्रकाशित कर दें कि मैं सत्ताईस दिन में मुकाबले पर पुस्तक प्रकाशित कर दूंगा। यदि आप इस समय सीमा में प्रकाशित कर दें तो आपने न केवल सत्ताईस रुपया इनाम पाएँ बल्कि हम सार्वजनिक रूप से प्रकाशित कर देंगे कि हमने इतना समय जो आप को शेख़-शेख़ करके पुकारा तथा मौलवी मुहम्मद हुसैन नहीं कहा यह हमारी बहुत बड़ी ग़लती थी बल्कि आप तो वास्तव में बड़े फ़ाज़िल और साहित्यकार हैं और इस योग्य हैं कि आप हदीस के जो अर्थ समझें वही स्वीकार किए जाएं।"

अब देखो कि इसमें आप को कितनी (अधिक) विजय प्राप्त होती है और फिर इसके बाद कुछ भी आवश्यकता नहीं कि आप रुपया एकत्र करने के लिए लोगों को कष्ट दें या इस नौकरी से त्याग पत्र देने के लिए तैयार हो जाएं। क्योंकि जब आप ने मेरा मुकाबला कर दिखाया तो मेरा इल्हाम झूठा कर दिया। इस स्थिति में मेरा तो कुछ शेष न रहा। अत: आप को ख़ुदा तआला की क़सम है कि यदि आप को अरबी भाषा में

शेष पृष्ठ 18 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रोपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

यदि ईमान उड़ कर सुरय्या पर भी चला जाएगा तो भी उसे एक फ़ारस का व्यक्ति वहां से वापस ले आएगा
मेरा लोगों में से ईसा इब्ने मरियम से सबसे क़रीबी सम्बन्ध है क्योंकि मेरे और उसके मध्य कोई नबी नहीं
{नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद}

لَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ○ وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ○ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ○ وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ○

(सूरत ज़ुख़्रूफ़ : आयत 58-61)

अनुवाद : और जब भी इब्ने मरियम (1) की घटना (क़ुरआन में) वर्णन की जाती है तो तेरी क़ौम इस (बात) पर-शोर मचाने लग जाती है। और यह भी कहने लग जाती है कि क्या हमारे उपास्य (2) अच्छे हैं या वह (अर्थात ईसा) अच्छा है। वह यह बात तेरे सामने केवल झगड़े के उद्देश्य से करते हैं, वास्तविकता यह है कि इस क़ौम में हक़ के ख़िलाफ़ बहसें करने की आदत है। वह (अर्थात ईसा) तो केवल एक व्यक्ति था जिस पर हमने ईनाम किया था और उस को बनीइस्राईल के लिए इब्रत के रूप में बनाया था। और यदि हम चाहते (3) तो तुम में से भी कुछ को मलायका बना देते जो ज़मीन मैं तुम्हारी जगह आबाद होते।

इन आयतों की व्याख्या में सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :-

(1) अर्थात : क़ुरआन मजीद में इब्ने मरियम के पुन: आने की ख़बर जब पढ़ते हैं तो शोर मचा देते हैं कि क्या वह हमारे उपास्यों से अच्छा है कि हमारे उपास्यों को तो नर्क में फेंका जाता है और उसे संसार की इस्लाह के लिए वापस लाया जाता है। हालाँकि दोनों घटनाओं में ज़मीन और आसमान का अंतर है। मसीह अलैहिस्सलाम स्वयं अपनी उपासना स्वीकार करता है और वह मर्द नेक पवित्र था उसका मुक़ाबला मुशरिकों या मुशरिकों के सरदारों से नहीं हो सकता।

(2) "हमारे उपास्य" से मुराद वह अवतार हैं जिनको वे ख़ुदा तआला के मुक़ाबला में सम्मान देते हैं यद्यपि उनके आगे अमलन सजदा न करते हों। जैसा कि आजकल के मुशरिक अर्थात शीया इत्यादि जो कहते हैं कि मह्दी के आने पर सब रसूल ज़िंदा किए जाऐंगे और उसकी आज्ञाकारिता करेंगे ।

(3) अर्थात : मसीह अलैहिस्सलाम पर फ़रिश्ते उतरे इसलिए कि वह आध्यात्मिक रूप में फ़रिश्ता बन गया था। यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग के लोग या आपके बाद के लोग भी मसीह जैसे बन जाते तो उन पर भी फ़रिश्ते उतरने लग जाते इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं। वर्तमान मुस्लमान केवल हठधर्मी से इस बात के इन्कार करने वाले हैं। (तफ़सीर सग़ीर पृष्ठ 816)

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ○ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ○

(सूरत नजम आयत 2-3)

अनुवाद : मैं सुरय्या (1) सितारे को जब वह लाक्षणिक तौर पर नीचे आ जाएगा इस बात की शहादत के लिए प्रस्तुत करता हूँ। कि तुम्हारा साथी न रास्ता भूला है न गुमराह (2) हुआ है।

इन आयात की व्याख्या में सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं।

(1) यह इस भविष्यवाणी की ओर संकेत है जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन शब्दों में फ़रमाई है कि

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ مِنْ فَارِسَ

अर्थात यदि ईमान उड़ कर सुरय्या पर भी चला जाएगा तो भी उसे एक फ़ारसी व्यक्ति वहां से वापस ले आएगा।

(2) अर्थात जब वह व्यक्ति ज़ाहिर होगा तो हर एक पर खुल जाएगा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा पूर्ण थी। न वह रास्ता भूले थे न गुमराह हुए थे और न नफ़सानी इच्छाओं के अधीन थे।

(तफ़सीर सग़ीर,पृष्ठ 877)

हज़रत नाफ़े वर्णन करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक रात मैंने स्वप्न में देखा कि मैं पवित्र काअबा के पास हूँ क्या देखता हूँ कि एक गंदुम रंग का ख़ूबसूरत व्यक्ति है बाल कंधों तक पहुंच रहे हैं, बाल सीधे चमकदार हैं जिनसे पानी के क़तरे टपकते नज़र आते हैं वह अपने हाथ दो व्यक्तियों के कंधों पर रखे बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहा है मैंने पूछा यह कौन है। लोगों ने बताया मसीह इब्ने मरियम है। फिर मैंने उनके पीछे एक और व्यक्ति देखा घुंघराले बाल, सख़्त चमड़ी, दाई आँख कानी, इब्ने क़ुतन से मिलती जलती शक्ल है और एक व्यक्ति के दोनों कंधों पर अपने हाथ रखे काअबा के गर्द घूम रहा है। मैंने पूछा यह कौन है? लोगों ने कहा यह मसीह दज्जाल है।

(नोट : स्वप्न में हुज़ूर को जो दृश्य दिखाया गया उस में काबा के तवाफ़ से यह अर्थ है कि मसीह बैतुल्लाह की हिफ़ाज़त और उसकी शान को बुलंद करने के लिए कार्यरत होंगे और दज्जाल काबा को नष्ट करने पर तुला होगा।)

(बुख़ारी किताबुल अम्बिया, उद्धरित हदीकतुस्सालेहीन संकलन श्रीमान मलिक सैफ़ुर्रहमान साहिब, हदीस नम्बर 944)

हज़रत अबू हुरेरह रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अम्बिया का आपस में सम्बन्ध (सौतेले)अलाती भाइयों की तरह है जिनका बाप एक और माँ अलग अलग हों। मेरा लोगों में से ईसा इब्ने मरियम से सबसे क़रीबी सम्बन्ध है क्योंकि मेरे और उसके मध्य कोई नबी नहीं वह मबऊस हो कर सलीब को तोड़ेगा अर्थात सलीबी अक़ीदे का खंडन करेगा सूअरों का वध करेगा (अर्थात अपवित्र लोगों की हलाकत का कारण होगा। अत: उसके द्वारा सलीबी प्रभुत्व का अंत (इंसिदाद) और सूअर प्रकृति वाले लोगों का ख़ात्मा होगा) जिज़्या ख़त्म करेगा। (अर्थात उसका युग मज़हबी जंगों के अंत का युग होगा उसके ज़माने में इस्लाम के सिवा अल्लाह तआला अन्य धर्मों को आध्यात्मिक दृष्टि से भी और शौकत के लिहाज़ से भी मिटा देगा और झूठे मसीह दज्जाल को हलाक करेगा और वह युग ऐसा अमन शांति का युग होगा कि ऊँट, शेर के साथ, चीते, गायों के साथ, भीड़िए, बकरियों के साथ इकट्ठे चरेंगे। बच्चे और बड़ी उम्र के लड़के साँपों के साथ खेलेंगे। अत: अल्लाह तआला के हुक्म के अनुसार जितना समय अल्लाह चाहेगा मसीह संसार में रहेंगे। फिर वफ़ात पाएँगे मुस्लमान उनका जनाज़ा पढ़ेंगे और उनकी तदफ़ीन करेंगे।

(अब्बू दाऊद किताबुल मलाहम, उद्धरित हदीकतुस्सालेहीन हदीस नम्बर 945)

कोई व्यक्ति यदि एक कण का हज़रवां भाग क़ुरआन करीम में से कुछ दोष निकाल सके या इसके मुक़ाबले में अपनी किसी पुस्तक की एक कणभर कोई ऐसी विशेषता सिद्ध कर सके जो क़ुरआनी शिक्षा के विपरीत हो और इससे उत्तम हो तो हम प्राण-दंड भी स्वीकार करने को तैयार हैं।

(कथन हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

क़ुरआन का मुक़ाबला आज तक कोई नहीं कर सका

समस्त क़ाफिर क़ुरआन करीम के मुक़ाबले पर सरस और सुबोध शैली के दावे तथा कवियों के बादशाह कहलाने के बावजूद मुख बंद किए बैठे रहे, तथा अब भी खामोश और निरुतर बैठे हुए हैं उनकी यही ख़ामोशी उनकी असमर्थता पर साक्ष्य प्रस्तुत कर रही है क्योंकि असमर्थता और क्या होती है यही तो है कि प्रतिद्वन्दी के तर्क को सुनकर और समझ कर खण्डन करके न दिखा सकें।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 152 हाशिया नंबर 11)

क़ुरआन की तीन विशेषताएं

क़ुरआन में तीन विशेषताएं हैं। प्रथम यह कि जो धार्मिक ज्ञान लोगों को ज्ञात नहीं रहे थे उनकी ओर मार्गदर्शन करता है। द्वितीय जिन ज्ञानों में पहले कुछ संक्षेप चल रहा था उनकी व्याख्या करता है। तृतीय जिन बातों में मतभेद, विवाद, उत्पन्न हो गया था उन में न्याय-संगत बात वर्णन करके सत्य और असत्य में अंतर प्रकट करता है।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 225 हाशिया नंबर 11)

ऐसा कोई प्रमाण प्रस्तुत करो जो क़ुरआन में न हो

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम क़ुरआन पर आरोप लगाने वालों और उसके विरोधियों को संबोधित करके फ़रमाते हैं।

यदि आप लोग कोई ठोस सच्चाई लिए बैठे हैं जसके सम्बन्ध में तुम्हारा यह विचार है कि हम ने घोर परिश्रम, मेहनत और बड़बोलेपन सेउसे उत्पन्न किया है और जो तुम्हारे मिथ्या विचार में क़ुरआन करीम इस सच्चाई के वर्णन करने में असमर्थ है तो तुम्हे सौगन्ध है कि सब कारोबार छोड़ कर वह सच्चाई हमारे सामने प्रस्तुत करो ताकि हम तुम्हे क़ुरआन करीम में से निकाल कर दिखा दें, परन्तु फिर मुसलमान होने के लिए तैयार रहो। यदि अब भी आप लोग दुर्भावना और बक बक करना न छोड़ें तथा शास्त्रार्थ का सीधा मार्ग न अपनाएं तो इसके अतिरिक्त और क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की फटकार हो।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 227 हाशिया नंबर 11)

क़ुरआन करीम की सच्चाई प्रमाणित करना हमारे ज़िम्मे है

यदि इस बात में संदेह हो कि क़ुरआन करीम क्योंकर अध्यात्म ज्ञान की समस्त सच्चायों पर व्याप्त है तो इस बात का हम ही दायित्व लेते हैं कि यदि कोई सज्जन सत्य अभिलाषी बनकर अर्थात् इस्लाम स्वीकार करने का लिखित आश्वासन देकर किसी इबरानी, यूनानी, लातीनी, अंग्रेज़ी, संस्कृत इत्यादि की किताब से कुछ धार्मिक सच्चाइयां निकाल कर प्रस्तुत करें या अपनी ही बुद्धि के बल पर अध्यात्म ज्ञान का कोई अत्यंत बारीक़ रहस्य पैदा करके दिखलाएं तो हम उसे क़ुरआन करीम में से निकाल देंगे।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 272)

पवित्र कुरआन ने अपनी रौशनी प्रत्येक युग में स्वयं दिखाई

यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम न आए होते और क़ुरआन करीम जिसके प्रभाव हमारे इमाम और बुज़ुर्ग हमेशा से देखते आए और आज हम देख रहे हैं न उतरा होता तो हमारे लिए यह बात अत्यंत कठिन होती कि हम जो केवल बाइबल के देखने से निश्चित तौर पर पहचान कर सकते की हज़रत मूसा और हज़रत मसीह और अन्य पूर्वकालीन नबी वास्तव में उसी पवित्र और पुनीत जमाअत में से हैं जिन्हें ख़ुदा ने अपनी विशेष कृपा से अपनी रिसालत के लिए चुन लिया है यह हमें क़ुरआन करीम का उपकार मानना चाहिए जिसने अपना प्रकाश प्रत्येक युग में स्वयं दिखाया और फिर उस पूर्ण प्रकाश से पूर्वकालीन नबियों की सच्चाई भी हम पर प्रकट कर दी और यह उपकार न केवल हम पर अपितु आदम से लेकर मसीह तक उन समस्त नबियों पर है जो क़ुरआन करीम से पूर्व गुज़र चुके तथा प्रत्येक रसूल उस सर्वश्रेष्ठ के उपकार का आभारी है जिसे ख़ुदा ने वह पूर्ण और पुनीत किताब प्रदान की जिसके पूर्ण प्रभावों की बरकत से समस्त सच्चायां हमेशा के लिए जीवित हैं, जिसने और नबियों की नुबुव्वत पर विश्वास करने के लिए एक ओर मार्ग खुलता है और उनकी नुबुव्वत संदेह और आशंकाओं से सुरक्षित रहती है।

पवित्र क़ुरआन के दो प्रकार के चमत्कार

स्पष्ट हो कि क़ुरआन करीम में हमेशा के लिए दो प्रकार के चमत्कार रखे गए हैं। एक क़ुरआन करीम के कलाम का चमत्कार दूसरा क़ुरआन करीम के कलाम के प्रभाव का चमत्कार। यह दोनों चमत्कार ऐसे असंदिग्ध हैं कि यदि किसी का हृदय बाह्य या आंतरिक विमुखता से संकीर्ण न हो तो वह तुरंत उस सच्चाई के प्रकाश को स्वयं अपनी आंखों से देख लेगा.....क़ुरआन करीम के कलाम के प्रभाव के संदर्भ में हम यह सबूत रखते हैं कि आज तक कोई ऐसी शताब्दी नहीं गुज़री जिसमें ख़ुदा तआला ने तत्पर और सत्याभिलाषी लोगों को क़ुरआन करीम का पूर्ण अनुसरण करने से पूर्ण प्रकाश तक नहीं पहुंचाया और अब भी अभिलाषी के लिए इस प्रकाश का अत्यंत विशाल द्वार खुला है यह नहीं कि केवल किसी पूर्व शताब्दी का उदाहरण दिया जाए जिस प्रकार सच्चे धर्म और ख़ुदाई किताब के वास्तविक अनुयायियों में अध्यात्मिक बरकते होनी चाहिए और ख़ुदा के विशिष्ट रहस्यों से इल्हाम वाला होना चाहिए वही बरकते अभिलाषी के लिए प्रकट हो सकती हैं जिसकी इच्छा हो निष्ठा के साथ ध्यान दें और देखें तथा अपने अंत को सुधार ले।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 290 हाशिया नंबर 1)

क़ुरआन में कुछ दोष निकाल कर दिखाओं

यदि कोई व्यक्ति एक कण का हज़रवा भाग क़ुरआन करीम में कुछ दोष निकाल सके या उसके मुक़ाबले में अपनी किसी पुस्तक की एक कणभर कोई ऐसी विशेषता सिद्ध कर सके जो क़ुरआनी शिक्षा के विपरीत हो और उससे उत्तम हो तो हम प्राण-दंड भी स्वीकार करने को तैयार हैं। अत: निर्णय और न्याय करने वालों !! विचार करो और ख़ुदा के लिए थोड़ा हृदय को स्वच्छ करके सोचो कि हमारे विरोधियों की इमानदारी और ख़ुदा का भय किस प्रकार का है कि निरुत्तर रहने के बावजूद फिर भी व्यर्थ बकने से नहीं रुकते।

समस्त सच्चाईयाँ इंजील में नहीं

ज्ञात होना चाहिए कि इंजील कि शिक्षा को पूर्ण विचार करना सरासर बुद्धि की कमी और नादानी है स्वयं हज़रत मसीह ने इंजील की शिक्षा को अपूर्णता से पवित्र नहीं समझा जैसा कि उन्होंने स्वयं फ़रमाया है कि मेरी और बहुत सी बातें हैं कि मैं तुम्हें कहूं परंतु तुम उनको सहन नहीं कर सकते परंतु जब वह अर्थात् "रुहुलहक़" आएगा तो वह तुम्हें समस्त सच्चाई का मार्ग दिखाएगा। इंजील युहन्ना बाब : 16 आयत 12, 13, 14 । अब कहिए क्या यही इंजील है जो समस्त धार्मिक सच्चाइयों पर व्याप्त है जिसके होते हुए क़ुरआन करीम की आवश्यकता नहीं।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 300 हाशिया नंबर 2)

ख़ुदा को पहचानने का सामान क़ुरआन करीम में है इंजील में नहीं

यह तो शोभनीय नहीं कि आप लोग मसीह के अनुयायी कहला कर फिर इस वस्तु को पूर्ण कहें जिसे आप से अठारह सौ ब्यासी वर्ष पूर्व मसीह अपूर्ण ठहरा चुका है और यदि आपका मसीह के कथन पर ईमान ही नहीं तथा स्वयं चाहते हैं कि इंजील का क़ुरआन करीम से मुकाबला करें तो बिस्मिल्लाह आइए और इंजील में से वे विशेषताएं निकाल कर दिखाए कि जो हमने इसी पुस्तक में क़ुरआन करीम के संदर्भ में सिद्ध की हैं ताकि न्याय-प्रिय लोग स्वयं ही देख लें कि ख़ुदा को पहचानने के साधन क़ुरआन करीम में उपलब्ध हैं या इंजील में।

(बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ाज़ायन भाग 1 पृष्ठ 301 हाशिया नंबर 2)

मिनारतुल मसीह का इतिहास और निर्माण

मुहम्मद हमीद कौसर

इंचार्ज विभाग तारीख़े अहमदियत क़ादियान

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आने वाले मसीह मौऊद और महदी माहूद (अलैहिस्सलाम) के संबंध में जो भविष्यवाणी फ़रमाई थीं, उन में यह भी वर्णन था कि: ''

اِذْ بَعَثَ اللّٰهُ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ فَيَنْزِلُ عِنْدَ الْمَنَارَةِ الْبَيْضَآءِ شَرْقِيَّ دِمَشْقَ''

(सही मुस्लिम, किताबुलफित्न-और शरायते साअत, बाब ज़िक्र दज्जाल)

अर्थात जब अल्लाह तआला (मसील) ईसा इब्ने मरियम (अर्थात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम को भेजेगा, तो उनका नुज़ूल एक सफ़ैद मिनार के पास होगा जो दमिशक़ के पूर्व की ओर स्थित होगा।

इतिहास गवाह है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह भविष्यवाणी फ़र्मा रहे थे दमिश्क़ में कोई सफ़ैद मिनार मौजूद नहीं था, जितने मिनारों का निर्माण हुआ बाद में हुआ।

मिनार का शब्द "नूर" से लिया गया है ''اَلْمَنَا رَةُ الْبَيْضَآءِ'' (सफ़ैद मिनार) का एक अर्थ यह भी था कि उम्मते मुहम्मदिया में अल्लाह तआला जिसे मसीले मसीह बनाकर भेजेगा। उसे दीने इस्लाम की सच्चाई के प्रकट करने के लिए नूरानी और रोशन प्रमाण के साथ भेजेगा। और उसके नूरानी प्रमाण के सामने झूठे धर्म के झूठे प्रमाण नष्ट हो जाऐंगे। सद-स्वभाव वाले लोग गवाह हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियान अलैहिस्सलाम (1835-ई-1908 ई) के प्रादुर्भव के द्वारा अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र मुख से निकले हुए एक एक शब्द को सच्च कर दिखाया। आप अलैहिस्सलाम की कुतुब, तहरीरात, मलफ़ूज़ात, मक्तूबात, इश्तिहारात गवाह हैं कि आपने झूठे धर्मों के झूठे प्रमाणों का नूरानी दलायल से रद्द फ़रमाया। इस भविष्यवाणी को ज़ाहिरी तौर पर पूरा करने के लिए भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने "मिनारतुल्-मसीह" का निर्माण करने की तहरीक फ़रमाई।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए "मिनारतुल्-मसीह" के निर्माण की तहरीक

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ादियान में मिनार के निर्माण की तहरीक फ़रमाते हुए तहरीर फ़रमाया :-

1."इस भविष्यवाणी के पूरा करने के लिए दो बार इस्लाम में कोशिश की गई है। प्रथम 741 हिज्री से पहले दमिशक़ की पूर्वी ओर संगमरमर के पत्थर से एक मिनार बनाया गया था। जो दमिशक़ से पूर्वी ओर और जामा उम्मवी का एक हिस्सा था। और कहते हैं कि कई लाख रुपया उस पर ख़र्च आया था और बनाने वालों का उद्देश्य यह था कि वह भविष्यवाणी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूरी हो जाए। लेकिन उस के बाद नसारी ने उस मिनार को जला दिया। फिर उस दुर्घटना के बाद 741 हिज्री में पुन: कोशिश की गई कि वह मिनार दमिशक़ की पूर्वी ओर फिर तय्यार किया जाए। इसलिए इस मिनार के लिए भी शायद एक लाख रुपया तक जमा किया गया। परन्तु ख़ुदा तआला के प्रारब्ध से जामे उलवी को आग लग गई और वह मिनार भी जल गया, उद्देश्य दोनों बार मुसलमानों को इस में नाकामी रही।"

(मज्मूआ इश्तेहारात भाग 3 पृष्ठ 315 एक जुलाई 1900 ई)

2. "यह उसी प्रकार का उद्देश्य है जैसा कि हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक सहाबी को किसरा के माले ग़नीमत में से सोने के कड़े पहनाए थे, ताकि एक भविष्यवाणी पूरी हो जाए।"

(मजमूआ इश्तेहारात भाग 3 पृष्ठ 316)

मिनार के निर्माण के तीन बुनियादी उद्देश्य :-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मिनार के निर्माण के तीन बुनियादी उद्देश्य तहरीर फ़रमाए :-

1. "प्रथम यह कि मुअज़्ज़न इस पर चढ़ कर पांचों वक़्त नमाज़ की आज़ान दिया करे और ताकि ख़ुदा के पवित्र नाम की ऊंची आवाज़ से दिन रात में पाँच बार तब्लीग़ हो। और ताकि थोड़े शब्दों में पांचों समय हमारी ओर से इन्सानों को यह आवाज़ दी जाए कि वह चिरस्थायी और स्थायी ख़ुदा जिसकी समस्त इन्सानों को उपासना करनी चाहिए केवल वही ख़ुदा है जिसकी ओर से उस का पवित्र और पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम राहनुमाई करता है। उसके अतिरिक्त न ज़मीन में न आसमान में और कोई ख़ुदा नहीं।"

(रुहानी ख़ज़ायन भाग 16 ख़ुत्बा इल्हामिया पृष्ठ 16)

2. "दूसरा अर्थ इस मिनार से यह होगा कि इस मिनार की दीवार के किसी बहुत ऊंचे हिस्से पर एक बड़ा लालटैन लगा दिया जाएगा। जिसकी लगभग एक सौ रुपया या कुछ ज़्यादा क़ीमत होगी। यह रोशनी इन्सानों की आँखें रोशन करने के लिए दूर दूर जाएगी।"

(रुहानी ख़ज़ायन भाग 16 ज़मीमा ख़ुत्बा इल्हामिया पृष्ठ 16)

3. "तीसरा अर्थ इस मिनार से यह होगा कि इस मिनार की दीवार के किसी ऊंचे हिस्से पर एक बड़ा घंटा जो चारसौ या पाँचसौ रुपया की क़ीमत का होगा लगा दिया जाएगा। ताकि इन्सान अपने समय को पहचानें और इन्सानों को समय की पहचान की ओर ध्यान हो।"

(ज़मीमा ख़ुत्बा इल्हामिया पृष्ठ 16 रुहानी ख़ज़ायन भाग 16)

मिनार के निर्माण के लिए पैसों का प्रबंध

1900 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मिनारतुल्-मसीह के निर्माण की योजना तैयार की, तो उस वक़्त जमाअत के लोगों की संख्या अधिक नहीं थी, और न ही उन के पास इतना धन था कि वे मिनार का निर्माण के लिए अधिक से अधिक चंदा अदा कर सकें। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब (ख़लीफ़तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि हज़रत अक़दस मस्जिद मुबारक में बैठे थे। मिनार बनाने की तजवीज़ सम्मुख थी। मीर हुसामुद्दीन साहिब स्यालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस हज़ार का आकलन किया। परन्तु प्रशन यह था कि दस हज़ार रुपया कहाँ से आए। क्योंकि उस वक़्त जमाअत की हालत ज़्यादा कमज़ोर थी और उन हालात में मिनार का निर्माण मुश्किल काम था और हुज़ूर अलैहिस्सलाम बार-बार फ़रमाते थे कि कोई ऐसा उपाय बताओ कि इस से भी कम रुपया ख़र्च हो। आख़िर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने दस हज़ार को सौ सौ रुपया के हिस्सों पर तक़सीम फ़रमाया। इसलिए जुलाई 1900 ई के इश्तिहार में मिनार के खर्चों को उपलब्ध करने के लिए हज़रत अक़दस ने अपने 101 ख़ुद्दाम की एक लिस्ट प्रकाशित करते हुए कम से कम एक एक सौ रुपया चंदा देने की तहरीक फ़रमाई और फ़ैसला किया कि इस पर लब्बैक कहने वालों के नाम मिनार पर बतौर यादगार लिखवा

दिए जाऐंगे। इस तहरीक के साथ ही आपके चार मुख़्लिस ख़ुद्दाम मुंशी अब्दुल अज़ीज़ ओजल्वी और मियां शादी ख़ान साहब लकड़ी बेचने वाले स्यालकोट, मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए और शेख़ नयाज़ अहमद साहिब ताजिर वज़ीर आबाद ने हज़ूर की शर्त के अनुसार चंदा पेश कर दिया जिन में से प्रथम वर्णित दो अस्हाब का वर्णन हुज़ूर ने इस इश्तिहार के आरंभ में भी अत्यधिक प्रशंसनीय शब्दों में फ़रमाया और उनकी क़ुर्बानी को जमाअत के लिए बहुत प्रशंसा करने योग्य ठहराया। हज़रत उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने मिनार के लिए एक हज़ार रुपया का चंदा लिखवाया जो दिल्ली के एक ज़ाती मकान को बेच कर दिया। तिथि 13 ज़ुल्हज्जा 1320 हिज्री के अनुसार 13 मार्च 1903 जुमआ के दिन मिनारतुल्-मसीह की नींव का पत्थर रखा गया। इस दिन जुमआ की नमाज़ के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समक्ष हकीम फ़ज़ल इलाही साहिब लाहौरी, मिर्ज़ा ख़ुदाबख़्श साहिब, शेख़ मौला बख़्श साहिब, क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब इत्यादी लोगों ने निवेदन किया कि हज़ूर के पवित्र हाथों से मिनारतुल् मसीह की बुनियादी ईंट रखी जाए तो उचित होगा। हुज़ूर आने फ़रमाया कि हमें तो अभी तक मालूम भी नहीं कि आज मिनारतुल् मसीह की बुनियाद रखी जाएगी। अब आप एक ईंट ले आएं मैं इस पर दुआ कर दूँगा और फिर जहां मैं कहूं वहां आप जा कर रख दें। इसलिए हकीम फ़ज़ल इलाही साहिब ईंट ले आए और हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उसे पवित्र टांग पर रखकर लंबी दुआ फ़रमाई। दुआ के बाद आपने इस ईंट पर दम किया और हकीम फ़ज़ल इलाही साहिब से इरशाद फ़रमाया कि आप उस को (निर्धारित) मिनारतुल्-मसीह के पश्चिमी हिस्सा में रख दें। हकीम साहिब महोदय और दूसरे लोग यह मुबारक ईंट लेकर जब मस्जिद अक्सा पहुंचे तो रास्ता में मौलवी अब्दुल करीम साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ जुमअ: पढ़ा कर वापस आ रहे थे। मौलवी साहिब की दिनचर्या थी कि नमाज़ जुम्आ से फ़ारिग़ हो कर देर तक मस्जिद अक्सा में बैठते थे। इल्म तथा हिक्मत की यह बड़ी सुन्दर महफ़िल होती थी। जिसमें बाहर से आने वाले लोग आपके निकट जमा हो जाते और आपसे लाभ प्राप्त करते थे। इस दिन भी आदत के अनुसार देर से आ रहे थे। रास्ता में जब यह बात मालूम हुई तो आप रिक़्क़त से भर गए और यह ईंट लेकर अपने सीने से लगाई और बड़ी देर तक दुआ करते रहे और फ़रमाया यह इच्छा है कि यह कार्य फ़रिश्तों में गवाह के रूप में रहे। आख़िर वह ईंट फ़ज़लुद्दीन साहिब अहमदी वास्तुकार ने बुनियाद के पश्चिमी हिस्सा में लगा दी और हज़रत मीर नासिर साहिब (रज़ियल्लाहु अन्हु) इस काम के निगरान निर्धारित हुए।

मिनार की बुनियाद बहुत गहरी बड़ी चौड़ी और कंक्रीट के द्वारा मज़बूत कर के उठाई गई।

मिनार के निर्माण को रुकवाने के लिए अहमदियत के दुश्मनों की सरकारी आफ़सरों तक पहुँच

आरंभ से ही क़ादियान में आर्य समाज से संबंध रखने वाले लोगों पर आधारित ऐसा वर्ग रहा जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस्लाम की सेवा के कारण से विरोध करता रहा। कभी अमृतसर से पण्डित खड़क सिंह को क़ादियान बुलाया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को वाद विवाद की दअवत दी, कभी इस्लाम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को झुठलाने के लिए "शुभचिंतक" अख़बार जारी किया, और कभी "तालीमुल-इस्लाम स्कूल" को असफल बनाने के लिए "दयानन्द जुबली स्कूल" खोला। कभी मस्जिद अक्सा में नमाज़ अदा करते नमाज़ियों को गालियां दीं।

जब "मिनारतुल्-मसीह" की बुनियाद रखी गई। तो इसी वर्ग ने ज़बरदस्त विरोध शुरू कर दिया, और इस की निर्माण को रुकवाने के लिए निषिद्ध आदेशों के जारी करवाने के लिए सरकारी आधिकारियों तक पहुंच की। ज़िला अधिकारी ने भी इस विषय की जाँच के लिए तिथि 8 मई 1903 को बटाला के तहसीलदार को क़ादियान भिजवाया। जब वह क़ादियान पहुंचा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सैर के लिए तशरीफ़ ले जा चुके थे। लगभग आधे घंटे के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलाम वापस तशरीफ़ लाए और निम्नलिखित प्रश्न उत्तर हुए।

तहसीलदार मिनार क्यों बनाया जा रहा है ?

हुज़ूर अलैहिस्सलाम (1) इस मिनार के निर्माण में एक यह भी बरकत है कि इस पर चढ़ कर ख़ुदा का नाम लिया जाएगा। और जहां ख़ुदा का नाम लिया जाता है वहां बरकत होती है।

2) इस के ऊपर एक लालटैन भी लगाई जाएगी, जिसकी रोशनी दूर दूर तक नज़र आएगी ।

3) एक घड़ियाल लगाया जाएगा

4) यह विचार कि इस से बेपर्दगी होगी यह भी ग़लत है, अब हमारे सामने डिप्टी शंकर दास साहिब का घर है। और इस क़दर ऊंचा है कि आदमी ऊपर चढ़े तो हमारे घर में उस की नज़र बराबर पड़ती है। तो क्या हम कहें कि उसे गिरा दिया जाए हम को चाहिए कि अपना पर्दा ख़ुद कर लेवें ।

हज़रत हाफ़िज़ रोशन अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि : जब मिनारतुल्-मसीह के बनने की तैयारी हुई तो क़ादियान के लोगों ने गर्वनमैंट के अधिकारियों के पास शिकायतें कीं कि इस मिनार के बनने से हमारे मकानों की पर्दादरी होगी। इसलिए गर्वनमैंट की ओर से एक डिप्टी क़ादियान आया। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मस्जिद मुबारक के साथ वाले कमरे (अलफ़िकर) में मिला। उस वक़्त क़ादियान के कुछ लोग जो शिकायत करने वाले थे वे भी उसके साथ थे। हज़रत साहिब से डिप्टी की बातें होती रहें और इस बातचीत में हज़रत साहिब ने डिप्टी को संबोधित कर के फ़रमाया कि यह बूढ्ढा मल बैठा है, आप इस से पूछ लें कि बचपन से लेकर आज तक क्या कभी ऐसा हुआ कि उसे फ़ायदा पहुंचाने का मुझे कोई अवसर मिला हो, और मैंने फ़ायदा पहुंचाने में कोई कमी की हो और फिर इसी से पूछें कि कभी ऐसा हुआ हो कि मुझे कष्ट देने का उसे कोई आवसर मिला हो तो उसने मुझे कष्ट पहुंचाने में कोई कमी छोड़ी हो। हाफ़िज़ साहिब ने वर्णन किया कि मैं उस वक़्त बूढ्ढामल की ओर देख रहा था उसने शर्म के मारे अपना सिर नीचे किया हुआ था और उस के चेहरे का रंग सपीद (सफ़ैद) पड़ गया। और वह एक शब्द भी मुँह से नहीं बोल सका।"

(सीरतुल महदी हिस्सा प्रथम पृष्ठ 138 रिवायत नंबर 148)

अंतत: यह झगड़ा डिप्टी कमिशनर बहादुर ज़िला गुरदासपुर की अदालत में पहुंचा। वहां जो फ़ैसला हुआ वह निम्नलिखित है।

"नक़ल हुक्काम इज्लास : सी. एम. डॉल्स साहिब बहादुर

डिप्टी कमिशनर। बहादुर ज़िला गुरदासपुर

फ़ैसला 13 मई 1903 नम्बर मुक़द्दमा 17-4

काग़ज़ात मिनारतुल्-मसीह क़ादियान की तैयारी के बारे मे और बहाने क़ादियान मे रहने वाले लोगो के विरुद्ध, इस समय कोई बात ऐसी नहीं है कि जिससे शांति भंग होने का भय हो। काग़ज़ात दफ़्तर मे जमा हों"

(उद्धरित अल् हकम 10 जून 1903 पृष्ठ 410)

इस फ़ैसले के साथ ही अहमदियत के दुश्मनों की साज़िश नाकाम हो गई। अलहमदु लिल्लाह अलाज़ालिक।

माली मुश्किलात के कारण से मिनार के निर्माण मे देरी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा की इच्छा अनुसार मिनारतुल्-मसीह का निर्माण शुरू करवाया था। परन्तु कुछ कठिनाइयों के कारण से निर्माण के कार्य को रोकना पड़ा।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि जब मिनार का काम (फ़ंड की कमी के कारण बंद पड़ा रहा तो एक दिन किसी व्यक्ति ने प्रश्न किया कि हुज़ूर यह मिनार कब तैयार होगा? हुज़ूर ने फ़रमाया यदि सारे काम हम ही ख़त्म कर जाएँ तो पीछे आने वालों के लिए सवाब कहाँ से होगा। इसलिए यही हुआ कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में मिनार की इमारत मस्जिद के सेहन की सतह से छः फुट से ज़्यादा ऊंची नहीं हो सकी।

मिनारतुल्-मसीह का समापन

अल्लाह तआला ने हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सानी (रज़ि अल्लाह तआला) को 14 मार्च 1914 को मस्नदे ख़िलाफ़त पर आसीन फ़रमाया। इस महान पद की ज़िम्मेदारियाँ सँभालने के कुछ माह बाद ही तिथि 27 नवम्बर 1914 को मिनार की अपूर्ण इमारत पर अपने हाथों से ईंट रखकर उस की निर्माण का काम दुबारा शुरू करवा दिया। इस दफ़ा निर्माण की निगरानी के कर्तव्य क़ाज़ी अब्दुर्रहीम साहिब भट्टी ने अदा किए। इस के लिए अजमेर से बेहतरीन संगमरमर मंगवाया गया और अंततः रसूले ख़ुदा के दलायल नबुव्वत का यह ज़बरदस्त निशान दिसन्बर 1915 मैं पूरा हो गया। यह सुन्दर और दिलकश और शानदार मिनार (जो निर्माण कला का एक उत्तम उदाहरण है एक सौ पाँच फुट ऊंचा है। इस की तीन मंज़िलें एक गुम्बद और 92 सीढ़ियां हैं।

अल्लाह तआला की तरफ़ से मिनारतुल्-मसीह की हिफ़ाज़त और सुरक्षा।

पिछले सौ सालों में बहुत से भूकम्प और तूफ़ान आए, उन आफ़ात में भी अल्लाह तआला ने मिनारतुल्-मसीह की हिफ़ाज़त फ़रमाई 8 अक्तूबर 2005 को लगभग सवा नौ बजे सुबह भयानक भूकम्प आया। विनीत पुराने दफ़तर सदर अंजुमन अहमदिया, जो मस्जिद अक्सा की पूर्व की ओर की इमारत में था, इस इमारत की उत्तरी ओर सेहन में बिल्कुल मिनारतुल्-मसीह के नीचे खड़ा था। मिनारतुल्-मसीह के निकट की समस्त इमारतें हिल रही थीं परन्तु मिनारतुल्-मसीह में ज़रा भी हरकत नज़र नहीं आ रही थी। ऐसा महसूस होता था कि मानो ख़ुदा के हाथ ने उसे पकड़ा हुआ था। ताकि भूकंप इस निशाने इलाही को कोई नुक़्सान न पहुंचाए।

क़ादियान में रहने वाले सदस्वभाव हिंदू और सिख दोस्त इस हक़ीक़त को स्वीकार करते थे कि मिनार की बरकत से अल्लाह तआला उन्हें मुसीबतों से सुरक्षित रखता है। इन स्वीकार करने वालों में हकीम स्वर्ण सिंह, ज्ञानी लाभ सिंह प्रसिद्ध हैं। जो अब फ़ौत हो चुके हैं।

धन्यवाद की अभिव्यक्ति

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखी कि :

"ऐसे समस्त लोगों के नाम लिखे जाऐंगे जिन्होंने कम से कम सौ रुपए मिनार के चंदा में दाख़िल किया हो। और यह नाम उनके लंबे समय तक बतौर कतबा के मिनार पर लिखा रहेंगे। जो आगे आने वाली नस्लों को दुआ का अवसर देते रहेंगे।"

(मज्मूआ इश्तिहारात भाग 3 पृष्ठ 319 एक जुलाई 1900)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वर्णित ऐलान के अनुसार 306 (तीन सौ छः) चंदा देने वालों के नाम मिनारतुल्-मसीह पर लिखे हैं।

समय गुज़रने के कारण से लिखे नामों की स्याही फीकी पड़ गई थी। जब इस की सूचना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में भिजवाई गई ,तो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लिखे हुए नामों में स्याही भरने की हिदायत और मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेश अनुसार जनवरी 2020 ई. में स्याही भरवाने का काम विभाग निर्माण क़ादियान के द्वारा पूर्ण करवाया। ख़ुदा तआला इसका उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। अब यह नाम दूर से पढ़े जा सकते हैं। और पढ़ने वाले चंदा देने वालों के लिए दुआएं भी करते हैं। अलहमदु लिल्लाह अला ज़ालिक।

इस वक़्त उन 306 सौभाग्यशाली चंदा देने वालो के नाम मिनारतुल्-मसीह क़ादियान पर लिखे हैं उन के नाम निम्नलिखित हैं।

1. हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम।
2. हज़रत मौलवी नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु
3. हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
4. हज़रत नुसरत जहान बेगम उम्मुल मोमिनीन
5. हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए.
6. हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान रईस मालेरकोटला
7. डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल सिवल सर्जन, क़ादियान
8. हाफ़िज़ रोशन अली रज़ियल्लाहु अन्हु क़ादियान
9. मौलवी ज़ुल्फ़िक़ार अली ख़ान गौहर रामपूरी मुहाजिर क़ादियान
10. मुहम्मद हयात ख़ान पेंशनर हाफ़िज़ाबाद
11. मौलवी ग़ुलाम अकबर ख़ान नवाब अकबर यार जंग हैदराबाद दक्कन
12. बाबू मुहम्मद अफ़ज़ल सुपरिटेंडेंट दफ़्तर रेज़ीडनट वज़ीरस्तान
13. ख़ान बहादुर मुहम्मद अली ख़ान नेगश पोलेटिकल अफ़्सर कोहाट
14. ख़ान साहब चौधरी नेअमतुल्लाह ख़ान सब जज बेगमपुर
15. रशीदा बेग़म पत्नी चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान बैरिस्टर ऐट लाहौर
16. शिक्षक मुहम्मद अफ़ज़ल ख़ान अफ़ग़ान ग़लज़ई डेरा ग़ाज़ी ख़ान
17. दौलत ख़ातून पत्नी शिक्षक मुहम्मद अफ़ज़ल ख़ान ग़लज़ई डेरा ग़ाज़ी ख़ान
18. अलताफ़ मुहम्मद ख़ान पुत्र शिक्षक मुहम्मद अफ़ज़ल ख़ान ग़लज़ई डेरा ग़ाज़ी ख़ान।
19. क़ुरैशी मुख़तार अहमद सुपरिटेंडेंट म्यूनसिंपल एजूकेशन दिल्ली
20. मर्यम सिद्दीक़ा पत्नी बाबू मुहम्मद शफ़ी नौशहरा ज़िला स्यालकोट
21. क़ाज़ी सय्यद अमीर हुसैन क़ादियान
22. मौलवी मुहम्मद सईद हैदराबाद दक्कन
23. मुंशी शादी ख़ान क़ादियान
24. मौलवी मुहम्मद अली एम.ए. एल.एल.बी
25. शेख़ नयाज़ अहमद व्यापारी वज़ीराबाद
26. मुंशी अब्दुल-अज़ीज़ पटवारी क़ादियान
27. हाजी सेठ अब्दुर्रहमान सौदागर मद्रास
28. सेठ अली मुहम्मद सौदागर बैंगलौर
29. हाजी सेठ सालिह मुहम्मद सौदागर मद्रास
30. सेठ अहमद सौदागर मद्रास
31. सेठ दाल जी लाल जी सौदागर मद्रास
32. मौलवी ज़हूर अली वकील हैदराबाद दक्कन
33. मीर हामिद शाह स्यालकोट
34. नवाब सय्यद मुहम्मद रिज़वी बंबई
35. मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ क़ादियान
36. मिस्त्री अहमद दीन भैरह
37. डाक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन क़ादियान
38. ख़लीफ़ा नूरुद्दीन जम्मू
39. हाफ़िज़ मुहम्मद इस्हाक़ हैदराबाद
40. सय्यद नासिर शाह क़ादियान
41. सय्यद फ़ज़ल शाह क़ादियान

42. सय्यद ग़ुलाम ग़ौस क़ादियान
43. डाक्टर रहमत अली अफ़्रीक़ा
44. बाबू मुहम्मद अफ़ज़ल सम्पादक अख़बार बदर
45. डाक्टर मुहम्मद इस्माईल ख़ान गुड़ियानी
46. पीर बरकत अली रनमल
47.शेख़ ग़ुलाम नबी सेठी क़ादियान
48. मौलवी शेर अली बी. ए. क़ादियान
49. मौलवी अब्दुल्लाह सनोरी
50. मियां रहमतुल्लाह सनोरी
51. मियां अबदुर्रहीम सनौरी
52. मियां हबीबुल्लाह सनौरी
53. सूफ़ी अब्दुल कदीर बी.ए. सनौरी
54. मास्टर क़ादिर बख़्श लुधियाना
55. मौलवी अब्दुरहीम दर्द एम.ए. क़ादियान
56. बाबू गुलाब ख़ान पेंशनर स्यालकोट
57. मियां मुहम्मदुद्दीन जिल्दसाज़ स्यालकोट
58. मास्टर क़मरुद्दीन लुधियाना
59. मौलवी अब्दुल क़ादिर मनसोरां ज़िला लुधियाना
60. मुंशी मुहम्मद अकबर ठेकेदार बटाला
61. हकीम मुहम्मद हुसैन क़ुरैशी लाहौर
62. मुंशी मुहम्मद जान औजला
63. चौधरी हाकिम अली क़ादियान
64. मियां मुहम्मद सिद्दीक़ सेखवां
65. मियां इमामुद्दीन सेखवां
66. मियां जमालुद्दीन सेखवां
67. मौलवी ग़ुलाम इमाम शाहजहांपूरी
68. मियां ख़ैर उद्दीन सेखवां
69. सूफ़ी नबी-बख़्श क्लर्क मुम्बासा
70. शेख़ अब्दुर्रहमान क्लर्क मुम्बासा
71. शेख़ मुहम्मद करम ईलाही वकील पटियाला
72. बाबू रोशन दीन पेंशनर स्यालकोट
73. बाबू शाह दीन स्टेशन मास्टर डूमैली
74. हाजी मुल्ला इमाम बख़्श
75. सेठ मूसा बिन उसमान जामनगर
76. डाक्टर रामानंद ज़िला गढ़वाल
77. शेख़ याक़ूब अली ऐडीटर अख़बार अलहकम क़ादियान
78. पत्नी याक़ूब अली ऐडीटर अख़बार अलहकम क़ादियान
79. महमूदा बहन याक़ूब अली ऐडीटर अख़बार अल-हकम क़ादियान
80. शेख़ ग़ुलाम ग़ौस भाई याक़ूब अली सम्पादक अख़बार अलहकम क़ादियान
81. हाजी ग़ुलाम अहमद करियाम
82. मुंशी हबीबुर्रहमान हाजीपूरा
83. क़ाज़ी मीर हसन अलीपूर मुल्तान
84. मौलवी उमरुद्दीन सरीह
85. पत्नी मौलवी उम्रमरुद्दीन सरीह
86. बाबू जमालुद्दीन गुजरांवाला
87. मौलवी अहमद शेर ख़ान हैदराबाद दक्कन
88. सेठ शेख़ हसन यादगीर
89. मुंशी नादिर ख़ान सरकाली ज़िला जेहलम
90. नादिर ख़ान सरकाली ज़िला जेहलम
91. मिर्ज़ा मुहम्मद सादिक़ लाहौर
92. हकीम फ़ज़लदीन भैरवी क़ादियान
93. मुंशी रुस्तम अली कोर्ट इन्सपैक्टर
94. मियां नबी-बख़्श सौदागर पश्मीना अमृतसर
95. मियां चिराग़ दीन लाहौर
96. मौलवी ग़ुलाम हुसैन पिशावर
97. शेख़ रहमतुल्लाह व्यापारी लाहौर
98. शेख़ अब्दुर्रहमान पेंशनर ई.ए.सी लाहौर
99. मास्टर ग़ुलाम मुहम्मद बी.ए.स्यालकोट
100. शेख़ फ़ज़ल हक़ बटाला
101. शेख़ मौला बख़्श बूट मरचैंट स्यालकोट
102. मुंशी अल्लाह दत्ता मैनेजर स्यालकोट
103. शेख़ ग़ुलाम हैदर डिप्टी इन्सपैक्टर पुलिस स्यालकोट
104. मौलवी अज़ीज़ बख़्श बी.ए.
105. मास्टर मुहम्मद इस्माईल टेलर मास्टर स्यालकोट
106. शेख़ मुहम्मद जान सौदागर वज़ीराबाद
107. हकीम मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श लाहौर
108. मुंशी मेहरदीन पटवारी कोहिलीयाँ तहसील शुक्र गढ़
109. मुंशी मुहम्मद क़ासिम लाला मूसा
110. हाजी मुफ़्ती गुलज़ार मुहम्मद बटाला
111. मिर्ज़ा हुसैन बेग़ ख़िर्क़ा ज़िला गुजरात
112. सूफ़ी मुहम्मद याक़ूब नंबरदार कीड़ी अफ़ग़ाना
113. बाबू फ़ख़र उद्दीन क्लर्क जी स्पलाई डीपू
114. डाक्टर अताउल्लाह ख़ान धर्मकोट बग्घा
115. बाबू निज़ामुद्दीन माहिल पूर
116. मास्टर अब्दुल अज़ीज़ टेलर मास्टर स्यालकोट
117. बाबू मुहम्मद वज़ीर ख़ान सब औरसीर क़ादियान
118. मौलवी क़ुदरत उल्लाह साहिब सनोरी
119. मियां अल्लाह दीन टेकरयान ज़िला रावलपिंडी
120. राजा अली मुहम्मद ई.ए.सी. चहोंबी ज़िला जेहलम
121. ख़ान बहादुर शेख़ मुहम्मद हुसैन पेंशनर जज अलीगढ़
122. डाक्टर सय्यद वलाएत शाह अफ़्रीक़ा क़ादियान
123. मुंशी गौहर अली कोटला अफ़ग़ाना
124. शेख़ मुश्ताक़ हुसैन गुजरांवाला
125. ख़ान साहब मुंशी फ़र्ज़ंद अली क़ादियान
126. ख़दीजा बेग़म पत्नी मुंशी फ़र्ज़ंद अली क़ादियान
127. अम्तुल्लाह बेग़म पत्नी मुंशी फ़र्ज़ंद अली क़ादियान
128. डाक्टर सय्यद अब्दुस्सतार शाह क़ादियान
129. सय्यदा सईदतुन्निसा पत्नी अब्दुस्सतार शाह क़ादियान
130. डाक्टर हश्मतूल्लाह क़ादियान
131. ख़ान साहब मुंशी बरकत अली शिमला
132. मौलवी अबदुर्रहीम नय्यर क़ादियान
133. जमात अहमदिया लेगोस क़ादियान
134. मौलवी आलमगीर ख़ान गम्बट सिंध
135. मिस्त्री अली बख़्श फ़रीदकोट
136. पत्नी मिस्त्री अली बख़्श फ़रीदकोट
137. डाक्टर जमादार अब्दुल करीम गुजरवाल ज़िला लुधियाना
138. शेख़ अली अलिफ़ ज़फ़र
139. मुंशी मुहम्मद दीन खारीयाँ
140. मियां ग़ुलाम नबी माहिलपूर
141. शेख़ फ़ज़ल अहमद बटाला
142. पत्नी शेख़ फ़ज़ल अहमद बटाला
143. डाक्टर सय्यद मुहम्मद हुसैन शाह दहरम कोट रंदहावा

144. बच्चे सय्यद मुहम्मद हुसैन शाह दहरम कोट रंदहावा
145. डाक्टर फ़ज़लदीन वेटनरी अस्सिटैंट क़ादियान
146. पत्नी डाक्टर फ़ज़लदीन वेटनरी अस्सिटैंट क़ादियान
147. बच्चे डाक्टर फ़ज़लदीन वेटनरी अस्सिटैंट क़ादियान
148. शेख़ अहमद उल्लाह नौशहरा छावनी
149. क़ाज़ी अब्दुल्लाह बी.ए. क़ादियान
150. सूफ़ी मुहम्मद अली जनजूआ जलाल पूर जट्टां
151. बाबू मुहम्मद अब्दुल्लाह क्लर्क फ़िरोज़ पूर
152. डाक्टर फ़ज़ल करीम क़ादियान
153. सेठ अब्दुल्लाह भाई सिकंदराबाद
154. पत्नी सेठ अब्दुल्लाह भाई सिकंदराबाद
155. सेठ अलादीन सिकंदराबाद
156. बाबू मुहम्मद शफ़ी सब ओवरसीज़ क़ादियान
157. मास्टर मुहम्मद दीन बी. ए. हेडमास्टर क़ादियान
158. बच्चे मास्टर मुहम्मद दीन बी. ए. हेडमास्टर क़ादियान
159. हाफ़िज़ सय्यद अब्दुल वहीद व्यापारी मंसूरी
160. हाफ़िज़ सय्यद अब्दुल मजीद व्यापारी मंसूरी
161. बाबू एजाज़ हुसैन दिल्ली
162. शेख़ अब्दुर्ररहमान क़ादियान
163. सूबेदार ग़ुलाम हुसैन चक 181 पाक पट्टन
164. मास्टर मुहम्मद तुफ़ैल क़ादियान
165. डाक्टर शाह नवाज़ स्यालकोट
166. पीर मंज़ूर मुहम्मद क़ादियान
167. मुंशी गुल मुहम्मद मिसल लिखने वाला तुला गंग ज़िला कीमबपुर
168. शेख़ नयाज़ मुहम्मद सब इन्सपैक्टर पुलिस गुजरांवाला
169. शेख़ ग़ुलाम हुसैन लुधियानवी हैड ड्राफ़्टसमैन नई दिल्ली
170. सेठ अली मुहम्मद एम.ए. सिकंदराबाद
171. फ़ातिमा बेग़म पुत्री सेठ अब्दुल्लाह भाई सिकंदराबाद
172. बाबू फ़ज़लदीन सब ओवरसीज़ मरदान
173. सेठ इस्माईल आदम बंबई
174. डाक्टर ग़ुलाम मुस्तफ़ा खारयान
175. सय्यद ग़ुलाम हुसैन डिप्टी सुपरिटेंडेंट वेटरनरी डिपार्टमैंट
176. सय्यदा जमीला ख़ातून पुत्री सय्यद अहमद हसन मुज़फ़्फ़र नगर
177. मास्टर मुहम्मद इब्राहीम सुकर ट्री ननकाना साहिब
178. मियां मुहम्मद शरीफ़ ई. ए. सी. लाहौर
179. अम्तुर्रहमान पुत्री क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन भैरह
180. ख़ान बहादुर चौधरी मुहम्मद दीन रिटायर्ड डिप्टी कमिशनर
181. मलिक मौला बख़्श अमृतसर
182. बाबू सिराजुद्दीन स्टेशन मास्टर
183. क़ुरैशी मुहम्मद उसमान इंजिनियर करनाल
184. मिर्ज़ा बरकत अली आबादान
185. अम्तुर्रहमान ख़ानम पत्नी मिर्ज़ा बरकत अली
186. इब्राहीम यूसुफ़ बुरदवली
187. बाबू अब्दुर्ररहमान अम्बाला
188. हाजी शेख़ मीराँ बख़्श अम्बाला
189. मियां ख़ुदा बख़्श हांडो
190. चौधरी सादिक़ अली तहसीलदार बेहलपूर ज़िला गुजरात
191. हकीम फजलुर्रहमान मुबल्लिग़ अफ़्रीक़ा
192. डाक्टर मलिक मुहम्मद रमज़ान श्री गोबिंदपुर
193. चौधरी मुहम्मद इस्माईल ई.ए.सी. खेवह बाजवा ज़िला स्यालकोट
194. मलिक मुज़फ़्फ़रपूर
195. बाबू अली हसन सनौरी हैड ड्राफ़्टमैन
196. फ़हमीदा बेग़म पुत्री मददाली शाहजहानुपूर
197. पत्नी चौधरी मुबारक अहमद कोहॉट
198. चौधरी फ़तह मुहम्मद स्याल एम.ए. क़ादियान
199. डाक्टर बदरुद्दीन अहमद अफ़्रीक़ा
200. मौलवी अब्दुलग़फ़ूर मौलवी फ़ाज़िल क़ादियान
201. फ़ातमतुज़्ज़ुहरा पत्नी मौलवी अब्दुललग़फ़ूर मौलवी फ़ाज़िल
202. सरदार मुहम्मद अली जोड़ाकरनाना
203. प्रोफ़ैसर मौलवी अब्दुल लतीफ़ चटागानग
204. सय्यद मुहम्मद लतीफ़ चक क़ाज़ीयां ज़िला गुरदासपुर
205. रसूल बी-बी तलवंडी मूसाए
206. सय्यद अब्दुल हलीम कटकी
207. बाबू वज़ीर मुहम्मद लाहौर
208. मौलवी फ़ज़ल उद्दीन वकील क़ादियान
209. चौधरी नूर अहमद ख़ान मुहर्रिर क़ादियान
210. शेख़ अब्दुल हमीद शिमला
211. ज़ैनब बी-बी पत्नी भाई महमूद अहमद क़ादियान
212. मौलवी अब्दुल मुग़नी ख़ान क़ादियान
213. ग़ुलाम मुहम्मद पुत्र मियां मुराद बख़्श राजपूत सय्यद वाला ज़िला शेख़ूपूरा
214. सूबेदार मुहम्मद अब्दुल्लाह इंडियन आर्मी क़ादियान
215. सय्यद ज़ैनुलआबेदीन वलीउल्लाह शाह
216. मियां मुहम्मद इस्माईल चक नंबर 537 मियांवाली ज़िला शेख़ूपूरा
217. चौधरी सुलतान अली मंघोवाल ज़िला गुजरात
218. मौलवी अब्दुल करीम तहाल ज़िला गुजरात
219. हाफ़िज़ सय्यद अब्दुल हमीद मंसूरी
220. मुहम्मद मदद अली इन्सपैक्टर आफ़ वर्क्स रेलवे ख़ानपुर रियासत बहावलपुर
221. मौलवी मुहम्मद अली बद्दू महलवी क़ादियान
222. चौधरी अब्दुल वाहिद नैरुबी
223. मास्टर अब्दुल अज़ीज़ पैंशनर नौशहरा तहसील पसरोर ज़िला स्यालकोट
224. फ़ातिमा बी-बी पत्नी मास्टर अब्दुल अज़ीज़ पैंशनर नौशहरा तहसील पसरोर ज़िला स्यालकोट
225. अख़तर बेग़म उर्फ़ फ़र्ख़ंदा अख़तर पुत्री मास्टर अब्दुल अज़ीज़ पैंशनर नौशहरा तहसील पसरोर ज़िला स्यालकोट
226. शेख़ अब्दुर्रशीद सदर बाज़ार मेरठ
227. डाक्टर शेर मुहम्मद हाली स्यालकोट
228. शेख़ अब्दुलग़नी गुड्स क्लर्क पिशावर
229. डाक्टर ग़ुलाम अली सब अस्सिटैंट सर्जन चहोर 117 ज़िला शेख़ूपूरा
230. ज़ैनब बेग़म पत्नी डाक्टर ग़ुलाम अली सब अस्सिटैंट सर्जन चहोर 117 ज़िला शेख़ूपूरा
231. सरदार अब्दुर्रहमान बी. ए .नौ मुस्लिम क़ादियान
232. ग़ुलाम फ़ातिमा पत्नी सरदार अब्दुर्र रहमान बी. ए. नौ मुस्लिम क़ादियान
233. अज़ीज़ बी-बी पत्नी बाबू ग़ुलाम रसूल ठेकादार क़ादियान
234. चौधरी नज़ीर अहमद तालिबपुर भंगवां ज़िला गुरदासपुर
235. मास्टर मौला बख़्श क़ादियान
236. रहमत बी-बी पत्नी मास्टर मौला बख़्श क़ादियान
237. चौधरी आज़म अली सब जज करतोल ज़िला शेख़ूपूरा
238. नेअमत बी-बी पत्नी चौधरी नूर अहमद ख़ान क़ादियान
239. सिराज बेग़म पत्नी डाक्टर बदरुद्दीन क़ादियान

240. सूफ़ी करम इलाही कंपोज़ीटर और शिमला अलादीन गर्वनमैंट प्रैस शिमला

241. सेठ अबू बकर यूसुफ़ (जद्दा)क़ादियान

242. सेठ मुहम्मद ग़ौस हैदराबाद दक्कन

243. हलीमा बेग़म पत्नी सेठ मुहम्मद ग़ौस हैदराबाद दक्कन

244. हुसैन बी-बी वालिदा ऑनरेबल सर चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ां डस्का ज़िला स्यालकोट

245. हकीम मुहम्मद उमर क़ादियान

246. बाबू मुहम्मद फ़ाज़िल सब ओवरसीज़ फ़िरोज़पुर

247. ज़ैनब बी-बी पत्नी बाबू मुहम्मद फ़ाज़िल ओवरसीज़ फ़िरोज़पुर

248. चौधरी ग़ुलाम अहमद ख़ां राजपूत सड़वा ज़िला होशियारपुर ऐडवोकेट हाइकोर्ट लाहौर

249. मलिक इमामुद्दीन पुत्र मलिक गुलाबुद्दीन निवासी समबड़याल ज़िला स्यालकोट

250. मलिक उम्र अली वलद मुल्क रहीम बख़्श खोखर रईस मुल्तान

251. मास्टर ख़ैर उद्दीन सुपरिटेंडेंट उर्दोनार्मल स्कूल उमरा ओतीबरार

252. मुज़फ़्फ़र बेग़म पुत्री मिर्ज़ा मुहम्मद अशर्फ़ साबिक़ नाज़िम जायदाद सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

253. हमीदुन्निसा ख़ानम पत्नी चौधरी अबुल हाशिम ख़ां नाटूर ज़िला राजशाही बंगाल

254. मास्टर फ़ज़ल करीम हेडमास्टर राम गढ़ सरदारां ज़िला लुधियाना

255. हाफ़िज़ अब्दुलअला बी.ए. पुत्र निज़ामुद्दीन निवासी उदरहुमा ज़िला शाहपुर

256 अब्दुर्रहीम पुत्र शेख़ मीर मुहम्मद नौशहरा ज़िला स्यालकोट

257. मुहम्मद इस्माईल मोतबर इब्ने ग़ुलाम क़ादिर मिल्यानी क़ादियान

258. ज़ैनब बेग़म पत्नी महमूद हसन आई .सी.ऐस.सब कलेक्टर

259. सय्यदा नुसरत बानो पत्नी डाक्टर इतरुद्दीन बंबई

260. सरदार बेग़म नौ मुस्लिमा पत्नी मलिक फ़ज़ल हुसैन धामां ज़िला गुजरात

261.चौधरी ग़ुलाम हसन सफेदपोश मुहाजिर क़ादियान मुहल्ला दारुल फ़ज़ल हुस्न मंज़िल

262. चौधरी अली अहमद कोट करम बख़्श ज़िला स्यालकोट

263. महर अली सब अस्सिटैंट सर्जन बिसाल रियासत बहावलपुर

264. डाक्टर नज़ीर अहमद ख़ां गगो डिस्पेंसरी ज़िला मिंटगुमरी सड़वा होशियारपुर

265. मलिक मुहम्मद इस्माईल सिरी गोबिन्दपुरी सौदागर मवेशी बिरादर अकबर डाक्टर मलिक मुहम्मद रमज़ान

266. डाक्टर मुहम्मद इब्राहीम ख़ां बस्ती दांशमंदां जालंधर

267. हाजी बक़ा उल्लाह अकाऊंट ऑफ़िस भोपाल

268. अज़ीज़ बेग़म पत्नी ख़ानसाहब बरकत अली सकना बस्ती शेख़ जालंधर सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

269. रज़ीया बेग़म हमशीरा मौलवी मुहम्मद याक़ूब मौलवीफ़ाज़ल क़ादियान

270. अनवर बेग़म पत्नी मौलवी मुहम्मद याक़ूब मौलवी फ़ाज़िल क़ादियान

271. हिक्मत बेग़म माता अब्दुल मग़ुनी ख़ां नाज़िर सदर अंजुमन अहमदिया सकना क़ायमगंज ज़िला फर्रुखाबाद

272. ख़ान ग़ुलाम मुहम्मद ख़ान आई.सी.ऐस. मियांवाली

273. चौधरी दिल मुहम्मद मौलवी फ़ाज़िल मुबल्लिग़ क़ादियान

274. मियां अल्लाह दत्ता पुत्र माहेअ निवासी प्लाह वालवा रियासत जम्मू

275. चौधरी नूरुद्दीन ज़ैलदार चक 6/6।7 ज़िला मिंटगुमरी माज़ोजगान

276. फ़िरोज़ ज़रगर मरहूम साकिन कुंदी हाजी ख़ैल मौज़ा तहकाल बाला ज़िला पेशावर

277. क़ाज़ी मुहम्मद रशीद अस्सिटैंट फ़िरोज़पुर आरसनल पत्नी सहित

278. पीर सलाहुद्दीन बी. ए. प्लेडर फ़िरोज़पुर

279. माता मसऊद अहमद अमृतसरी

280. बहन मसऊद अहमद अमृतसरी

281. सईदा बेग़म पुत्री सेठ मुहम्मद ग़ौस हैदराबाद दक्कन

282. सलीमा बेग़म पुत्री सेठ मुहम्मद ग़ौस हैदराबाद दक्कन

283. अम्तुल हफ़ीज़ बेग़म पुत्री सेठ मुहम्मद ग़ौस हैदराबाद दक्कन

284. सेठ मुहम्मद आज़म हैदराबाद दक्कन

285. अज़ीज़ बेग़म पत्नी सेठ मुहम्मद आज़म हैदराबाद दक्कन

286. अम्तुल हई बेग़म बिंत सेठ मुहम्मद ग़ौस हैदराबाद दक्कन

287. महमूदा बेग़म पत्नी मुहम्मद मुइनुद्दीन हैदराबाद दक्कन

288. अब्दुल अज़ीज़ सकना चक सिकन्दर ज़िला गुजरात

289. डाक्टर नज़ीर अहमद वलद सरदार अबदुर्ररहिमान अफ़्रीक़ा

290. मुहम्मद ई बख़्श अहमदी सिन्नोर रियासत पटियाला पत्नी के साथ अश करामतुन्निसा साहिबा

291. चौधरी करमुद्दीन भट्टी चक 69/313 पेंशनर मुहाजिर क़ादियान निर्धारित स्यालकोट

292. मुहम्मद शफ़ी पुत्र शेख़ मीर मुहम्मद नौशहरा ककेज़ई ज़िला स्यालकोट

293. अल्लाह जवाया अहमदी निवासी चैन्यूट हाल आगरा बैअत तक़रीबन 1913 ई

294. मर्यम ख़ातून पत्नी मौलवी अल्लाह दत्ता साहिब मरहूम जम्मू हाल मुहाजिर क़ादियान

295. सरदार बशारत अहमद अफ़्रीक़ा पुत्र मास्टर अब्दुल रहमान साहिब बी. ए. क़ादियान

296. डाक्टर फ़तहउद्दीन अहमदी जांगपूरी फिर क़ादियान

297. मर्यम शाह नवाज़ ख़ां पुत्री मियां अब्दूर्रज़्ज़ाक़ स्यालकोटी

298. बी-बी नसीमा ख़ातून जद्दा मुहतरमा हज़रत सारा बेग़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा गांव जमगाओं ज़िला भागलपुर बिहार

299. शेख़ अब्दुल्लाह और स्कॉटग्लास्गो, स्कॉटलैंड

300. अज़ीज़ बानो पुत्री मुंशी फ़य्याज़ अली, सरावह, ज़िला मेरठ

301. बाबू ख़ुशी मुहम्मद, पार्सल क्लर्क, ज़िला सोहदरा कोपरा, ज़िला गुजरांवाला

302. नुसरत सुल्ताना बेग़म साहिबा गुजराती , लाहौरी

303. मुंशी अब्दुल करीम गांव नौशहरा ककेज़ई ज़िला स्यालकोट

304. सय्यद मुहम्मद हुसैन शाह वलद अता मुहम्मद शाह मुख़्तार आम साहिबज़ादगान मसीह मौऊद पिता डाक्टर मुहम्मद जी अहमदी

305. कैप्टन डाक्टर मुहम्मद जी अहमदी वलद सय्यद मुहम्मद हुसैन शाह मैडीकल अफ़्सर ननकाना साहिब ज़िला शेख़ूपूरा

306. बरकतुन्निसा बेग़म पत्नी सय्यद मुहम्मद हुसैन शाह मुख़्तार आम साहिबज़ादगान मसीह मौऊद वालिद डाक्टर मुहम्मद जी अहमदी

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पक्ष में निबंध रचना तथा

धार्मिक चर्चाओं के मध्य ख़ुदा तआला का समर्थन और ईमान बढ़ाने वाली घटनाओं का प्रकटन

(तनवीर अहमद नासिर , उप संपादक अख़बार बदर उर्दू क़ादियान)

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब सयालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी पुस्तक "सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम" में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बचपन की एक विचित्र घटना लिखते हैं कि

"महमूद चार एक वर्ष का था। हज़रत (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम - उद्धरित) आमतौर पर दिनचर्या के अनुसार अंदर बैठे लिख रहे थे। मियां महमूद दियासिलाई लेकर वहां आए और आपके साथ बच्चों का एक ग्रुप भी था। पहले कुछ देर आपस में खेलते झगड़ते रहे फिर जो कुछ दिल में आया, उन मुसव्वादात (लिखे हुए कागज़ों) को आग लगा दी और आप ख़ुश होने लगे और तालियाँ बजाने और हज़रत लिखने में व्यस्त हैं, सिर उठा कर देखते भी नहीं कि क्या होर हा है। इतने में आग बुझ गई और क़ीमती मुसव्वदे राख का ढेर हो गए। और बच्चों को किसी और खेल ने अपनी ओर खींच लिया। हज़रत को संदर्भ के वाक्यांश मिलाने के लिए किसी पिछले काग़ज़ को देखने की ज़रूरत हुई। उससे पूछते हैं ख़ामोश। इस से पूछते हैं डरा जाता है। आख़िर एक बच्चा बोल उठा कि मियां साहिब ने काग़ज़ जला दीए हैं। औरतें बच्चे और घर के सब लोग हैरान और अंगुश्त ब-दंदाँ (उँगलियाँ दांतों में लिए) कि अब क्या होगा..... परन्तु हज़रत मुस्कुरा कर फ़रमाते हैं, ख़ूब हुआ। इस में अल्लाह तआला का कोई बड़ा भेद होगा और अब ख़ुदा तआला चाहता है कि इस से बेहतर मज़मून समझाए।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम,पृष्ठ 23 प्रकाशन कैनेडा)

इस घटना से जहां सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक निहायत ख़ूबसूरत आचरण क्षमा और विनम्रता का पता चलता है वहीं इस बात का भी अनुमान होता है कि जो ज्ञान के दरिया आप ने बहाए वह ख़ुदा तआला ने एक विशेष हिक्मत के अधीन आप नेअपनी ओर से अता फ़रमाए थे। जिस ज़माने में आप आए उस वक़्त इस्लाम चारों ओर से इस्लाम के दुश्मनों के आरोपों से घिरा हुआ था। विशेषता ईसाई और आर्यासमाजी अत्यधिक गंदे और भड़काने वाले लेख इस्लाम के विरुद्ध प्रकाशित कर रहे थे। इन हालात को देखकर आप का हृदय बिना पानी के मछली की भांति तड़पता था। आपकी इस बेक़रारी का अनुमान आपकी इस दुआ से होता है, ख़ुदा के समक्ष आप बयान करते हैं : "ख़ुदाया मुझे ऐसे शब्द अता फ़र्मा और ऐसी तक़रीरें इल्हाम कर जो उन दिलों पर अपना नूर डालें और अपनी विष रोधक विशेषता से उनका विष दूर कर दें।"

(शहादतुल क़ुरआन, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 6 पृष्ठ 398)

अल्लाह तआला ने आप की दुआओं को अत्यधिक क़बूलीयत का स्थान दिया और आप की प्रार्थनाओं को सुना और इस्लाम के दुश्मनों के आरोपों को ध्वस्त करने के लिए अरबी, फ़ारसी और उर्दू भाषाओँ पर आप को पूर्ण प्रतिभा अता फ़रमाई और उन्हें आप का पूर्ण आज्ञाकारी और अनुयायी कर दिया और यह प्रतिभा आपको अता फ़रमाई कि चाहे कैसा ही विषय हो आप आसानी के साथ ठोस और व्यापक लेख लिखा करते और जिस भाषा में लिखते उसके अत्यधिक उचित शब्दों को अपनी अपनी जगह पर मोतीयों की तरह जोड़े हुए नज़र आते। आप निबंध रचना में ख़ुदा तआला की अदृश्य सहायता और मदद के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं :

"मैं ख़ुदा तआला के चमत्कारों को विशेषता निबंध रचना के समय भी अपने सम्बन्ध में देखता हूँ क्योंकि जब मैं अरबी में या उर्दू में कोई वाक्यांश लिखता हूँ तो मैं महसूस करता हूँ कि कोई अंदर से मुझे शिक्षा दे रहा है और हमेशा मेरी तहरीर जबकि अरबी हो या उर्दू या फ़ारसी, दो हिस्सों पर विभाजित होती है। (1) एक तो यह कि बड़ी आसानी से सिलसिला शब्दों और अर्थों का मेरे सामने आता जाता है और मैं उसको लिखता जाता हूँ और जबकि इस तहरीर में मुझे कोई कठिनाई नहीं उठानी पड़ती (2) दूसरा हिस्सा मेरी रचना का केवल इंसानी समर्थय से अलग तौर पर है और वह यह है कि जब मैं उदाहरणता एक अरबी वाक्यांश लिखता हूँ और वाक्यांश के सिलसिले में कुछ ऐसे शब्दों की ज़रूरत पड़ती है कि वे मुझे मालूम नहीं हैं तब उनके सम्बन्ध में ख़ुदा तआला की वह्यी मार्ग दर्शन करती है और वे शब्द ही वह्यी की तरह रूहुल-क़ुदुस मेरे दिल में डालता है और ज़बान पर जारी करता है उदाहरणता अरबी वाक्यांश के सिलसिला के लिखने में मुझे एक शब्द की ज़रूरत पड़ी जो ठीक ठीक बिसयारी अयाल का अनुवाद है और वह मुझे मालूम नहीं और वाक्यांश का सिलसिला उसका मुहताज है तो तुरन्त दिल में वही वह्यी की तरह शब्द "ज़फ़फ़" डाला गया जिसके अर्थ हैं बिसयारी अयाल। या उदाहरणता तहरीर लिखते समय पर मुझे ऐसे शब्द की ज़रूरत पड़ी जिसके अर्थ हैं ग़म और ग़ुस्सा से चुप हो जाना और मुझे वह शब्द मालूम नहीं तो तुरन्त दिल पर वह्यी हुई कि "वजूम"। ऐसा ही अरबी वाक्यांश का हाल है। अरबी तहरीरों के वक़्त में कई सौ बने-बनाए फ़िक़्रात वह्यी की तरह दिल पर अवतरित होते हैं और या यह कि कोई फ़रिश्ता एक काग़ज़ पर लिखे हुए वे वाक्यांश दिखा देता है और कुछ वाक्यांश कुरआन की आयतें होती हैं या उनके समान कुछ थोड़े से बदलाव से ..... अत: यही रहस्सय है जिसके कारण से मैं एक संसार को अरबी के चमत्कारों वाली सुवक्त तफ़सीर लिखने के मुक़ाबले पर बुलाता हूँ। अन्यथा इन्सान क्या चीज़ और इब्ने आदम की क्या वास्तविकता कि ग़रूर और घमंड के मार्ग से एक संसार को अपने मुक़ाबिल पर बुलाए।"

(नुज़ूलुल मसीह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 18 पृष्ठ 434 से 436)

उस समय के विद्वानों को लिखित रूप में शास्त्रार्थ की दावत और ख़ुदा तआला की सहायता के महान निशान

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लुधियाना से 26 मार्च 1891 ई. को एक इश्तिहार के द्वारा समस्त प्रसिद्ध उल्मा को लिखित रूप में शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया और लिखा कि मेरा दावा कदापि ख़ुदा के कथन और उसके रसूल के कथन के विरुद्ध नहीं यदि आप साहिबान स्थान और तिथि निर्धारित करके एक आम जलसे में मुझसे लिखित रूप में शास्त्रार्थ नहीं करेंगे तो आप ख़ुदा तआला और उसके पवित्र बंदों की नज़र में विरोधी ठहरेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इश्तिहार पर और तो कोई सामने नहीं आया लेकिन मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने यह कहना शुरू कर दिया कि मिर्ज़ा साहिब को चाहीए कि वह मुझ से शास्त्रार्थ कर लें। यह शास्त्रार्थ लिखित रूप में था और 20 से 29 जुलाई 1891 तक जारी रहा। हज़रत अकदस का मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से शास्त्रार्थ शुरू हुआ। यह शास्त्रार्थ लिखित रूप में था और 20 से 29 जुलाई 1891 ई. तक अर्थात दस दिन चलता रहा। शास्त्रार्थ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बुख़ारी शरीफ़ रख लेते और अत्यधिक लिखते जाते जब लेख तैयार हो जाता तो पढ़ कर सुना दिया जाता। परन्तु उधर बड़ी मुश्किल से मज़मून तैयार किया जाता और बड़ी दिक़्क़त से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी अपना लेख तैयार करके सुनाते।

एक चमत्कार : हज़रत पीर सिराजुल्हक साहिब की रिवायत के अनुसार इस शास्त्रार्थ के दौरान मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने बुख़ारी का एक हवाला माँगा। उस वक़्त वह हवाला हज़रत अकदस को याद नहीं था और न आपके खादिमों में से किसी और को याद था। परन्तु हज़रत अकदस ने बुख़ारी शरीफ़ का नुस्ख़ा मंगाया और उसके पृष्ठ पलटने शुरू कर दिया और जल्दी जल्दी उसका एक-एक पृष्ठ उल्टने लगे और आख़िर एक जगह पहुंच कर आप ठहर गए और फ़रमाया। लो यह देख लो। देखने वाले सब हैरान थे कि यह क्या बात है किसी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पूछा, तो आपने फ़रमाया कि जब मैंने पुस्तक हाथ में लेकर पृष्ठ उल्टाने शुरू किए तो मुझे पुस्तक के पृष्ठ ऐसे नज़र आते थे कि मानो वह ख़ाली हैं और उन पर कुछ नहीं लिखा। इस लिए मैं उनको जल्द जलद उल्टाता गया आख़िर मुझे एक पृष्ठ मिला जिस पर कुछ लिखा हुआ था। और मुझे यक़ीन हो गया कि यह वही हवाला है जिसकी मुझे ज़रूरत है मानो अल्लाह तआला ने ऐसा चमत्कार प्रकट फ़रमाया कि उस जगह के अतिरिक्त जहां हवाला वर्णित था अन्य समस्त पृष्ठ आपको ख़ाली नज़र आए।

(तारीख अहमदियत, भाग प्रथम पृष्ठ 408)

इस शास्त्रार्थ में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने बहुत चालाकियां कीं लेकिन वे सब उन पर उल्टी पड़ीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम उसे क़ुरआन की तरफ़ लाते थे लेकिन वह अपने बचाओ के लिए हदीस की ओर भागता था। असल बेहस मसीह अलैहिस्सलाम के मृत्यु तथा जीवित होनी पर होनी थी लेकिन वह इस से भी बचता रहा। आख़िरी दिन जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पर्चा सुनाना शुरू किया तो मौलवी-साहब का चेहरा काला पड़ गया और ऐसी घबराहट हुई और इस क़दर होश उड़े हुए कि नोट करने के लिए जब क़लम उठाया तो ज़मीन पर क़लम मारने लगे दवात उसी तरह रखी रह गई और क़लम कई बार ज़मीन पर मारने से टूट गया और जब यह हदीस आई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो हदीस क़ुरआन के विरुद्ध हो वह छोड़ दी जाए और क़ुरआन को ले लिया जाए तो इस पर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब को निहायत ग़ुस्सा आया और कहा यह हदीस बुख़ारी में नहीं है। और जो यह हदीस बुख़ारी में हो तो मेरी दोनों बीवीयों पर तलाक़ है। इस तलाक़ के शब्द से समस्त लोग हस पड़े और मौलवी-साहब से शर्म के कारण और कुछ न बन पड़ा। और बाद में कई दिनों तक लोगों से मौलवी-साहब कहते रहे कि नहीं नहीं मेरी दोनों बीवीयों पर तलाक़ नहीं पड़ी। और न मैंने तलाक़ का नाम लिया है। पहले तो चंद लोगों को उसकी ख़बर थी लेकिन अब मौलवी-साहब ही ने हज़ारों को इसकी सूचना कर दी। कई महीने बाद जबकि यह शास्त्रार्थ प्रकाशित हो चुका था, दिल्ली में एक जलसा आयोजित हुआ जिसमें बहुत से विद्वानों ने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी पर ज़बरदस्त कटाक्ष किया कि तुमने जो मिर्ज़ा साहिब से लुधियाना में शास्त्रार्थ किया है इस में तुमने क्या-किया और क्या करके दिखाया असल बेहस तो कुछ भी न हुई। बटालवी साहिब ने उत्तर दिया कि असल बेहस किस तरह करता इसका पता ही नहीं। क़ुरआन शरीफ़ में मसीह के जीवित होने का और आकाश की ओर जाने का कोई वर्णन नहीं। हदीसों से केवल नुज़ूल साबित होता है मैं मिर्ज़ा साहिब को हदीसों पर लाता था और वह मुझे क़ुरआन की ओर ले जाते थे।

(तारीखे अहमदियत, भाग प्रथम पृष्ठ 410)

निबंध रचना का महान चमत्कार

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम अपने दावा की तब्लीग़ और इशाअत के लिए दिल्ली भी तशरीफ़ ले गए 29 सितंबर 1891ई. को दिल्ली पहुंचे और नवाब लोहारो की दौ मंज़िला कोठी स्थित मुहल्ला बल्लीमारा में ठहरे हुए थे और सय्यद नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी और शम्सुल ओलमा मौलवी अब्दुल हक़ साहिब को मसीह की वफ़ात पर लिखित रूप में शास्त्रार्थ की दावत दी। मौलवी अब्दुलहक साहिब ने तो क्षमा मांग ली लेकिन मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के प्रेरित करने पर शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो गए। इसके बाद मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और उनके साथियों की चालों और साज़िशों का जो बाज़ार गर्म हुआ और किस तरह ख़ुदा के शेर ने दिल्ली की जामा मस्जिद में मौलवी नज़ीर हुसैन को ललकारा वह अहमदियत के इतिहास का एक खुला अध्याय है। मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब तो किसी तरह इस शास्त्रार्थ का कड़वा घूँट पीने से बच गए लेकिन मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब शास्त्रार्थ के लिए तैयार हो और 23 अक्तूबर 1891 को शास्त्रार्थ का आरंभ हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शास्त्रार्थ शुरू होने से पूर्व अपने दावा के सम्बन्ध में मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब और उनके मित्रों को संबोधित करके एक उच्च कोटि का भाषण दिया। हज़ूर का यह भाषण अभी चल रहा था कि मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब भाषण के बीच ही में बोल उठे कि आप आज्ञा दें तो मैं सहन के दूसरे हिस्सा में जा कर बैठूँ और वहां कुछ लिखूँ। हज़रत अक़दस ने फ़रमाया। बहुत अच्छा! इसलिए मौलवी साहब सेहन के उस हिस्सा में जा बैठे और जो मज़मून घर से लिख कर लाए थे नक़ल करवाने लगे। हालाँकि शर्त यह थी कि कोई अपना पहला मज़मून न लिखे बल्कि जो कुछ लिखना होगा वह उसी वक़्त जलसे के बेहस में लिखना होगा। इस ख़िलाफ़वरज़ी पर मौलाना अब्दुल करीम साहिब ने कहा यह तो शर्त के ख़िलाफ़ है । पीर सिराजुल्हक साहिब नुमानी ने हज़रत अक़दस से अर्ज़ किया कि हुज़ूर आज्ञा दें तो मैं मौलवी-साहब से कह दूं कि आप लिखा हुआ तो लाए हैं यही दे दीजिए। ताकि उसका उत्तर लिखा जाए। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने इस की न चाहते हुए आज्ञा दे दी। उन्होंने खड़े हो कर कहा कि मौलवी-साहब लिखे हुए मज़मून को नक़ल कराने की क्या ज़रूरत है देर होती है लिखा हुआ मज़मून दे दीजिए ताकि इधर से जल्दी उत्तर लिखा जाए। मौलवी-साहब ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने घबरा कर उत्तर दिया। नहीं नहीं! मैं मज़मून लिख कर तो नहीं लाया सिर्फ़ नोट लिख लाया था, जिन्हें विस्तार से लिख रहा हूँ। हालाँकि वह मज़मून का एक-एक शब्द ही लिखवा रहे थे। इसके

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

उत्तर में पीर साहिब ने कुछ कहना चाहा परन्तु हज़रत अकदस ने उन्हें रोक दिया। और हुज़ूर ने मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब से यह फ़रमाया कि जब मौलवी-साहब मज़मून दें तो मुझे भेज दिया जाए, ऊपर के कमरे में तशरीफ़ ले गए और मौलवी-साहब के मज़मून देने पर मुंशी साहिब ने वह ले जाकर हुज़ूर की ख़िदमत में पेश कर दिया। हज़रत अकदस ने मौलवी-साहब के मज़मून पर पहले पृष्ठ से लेकर आख़िर पृष्ठ तक बहुत तेज़ी से नज़र फ़रमाई और इस का उत्तर लिखना शुरू कर दिया। जब मज़मून के दो पृष्ठ तैयार हो गए तो हुज़ूर मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब को नीचे नक़ल करने को दे आए। एक-एक पृष्ठ लेकर मौलवी अब्दुल करीम साहिब और अब्दुल कुद्दूस साहिब ने नक़ल करना शुरू किया। इसी तरह मुंशी साहिब हज़रत साहिब का मसव्वदा लाते और ये दोनों साहिब नक़ल करते रहते। हज़रत अकदस इतनी तेज़ी से लिख रहे थे कि अब्दुल कुद्दूस साहिब जो ख़ुद भी बड़े तेज़ लिखने वाले थे आश्चर्य चकित हो गए। और हुज़ूर की तहरीर पर उंगली का पोरा लगा कर स्याही देखने लगे कि यह कहीं पहले का लिखा हुआ तो नहीं। मुंशी ज़फ़्फ़र अहमद साहिब ने कहा कि यदि ऐसा हो तो यह एक महान चमत्कार होगा कि उत्तर पहले से लिखा हुआ है। हज़रत अकदस की यह हैरत-अंगेज़ क़ुव्वत लेखन शेली की देखकर मौलवी मुहम्मद बशीर साहिब को हुज़ूर की ख़िदमत में निवेदन करना पड़ा कि यदि आप आज्ञा दें तो मैं कल अपने रहने के स्थान ही से उत्तर लिख लाऊं। हुज़ूर ने बिना किसी देरी के आज्ञा दे दी और फिर मौलवी-साहब ने शास्त्रार्थ के ख़त्म होने तक यही तरीक़ा रखा कि हज़रत अकदस का मज़मून मिलने पर हुज़ूर से आज्ञा लेकर अपने रहने के स्थान पर चले जाते और मज़मून वहीं से लिख कर लाते उन्होंने सामने बैठ कर कोई मज़मून तहरीर नहीं किया। इस शास्त्रार्थ का विस्तार पूर्ण वर्णन "अल्हक दिल्ली" के नाम से प्रकाशित हुआ"।

(तारीखे अहमदियत, भाग अव्वल, मुलख़्ख़स पृष्ठ 421 से 432)

एक रात में अरबी भाषा की चालीस हज़ार धातुओं की प्रप्ति

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सन् 1893 ई. में पुस्तक आईना कमालाते इस्लाम की रचना फ़रमाई जिसमें असंख्य मत्वपूर्ण शास्त्रार्थ उदाहरणता स्थान फ़ना, बक़ा, लिक़ा, रूहुल-क़ुदुस की दाइमी रिफ़ाक़त और मलायक और जिन्नात के अस्तित्व के प्रमाण पर नए ढंग से रोशनी डाली। जनवरी 1893 ई. को जब पुस्तक का उर्दू संस्करण पूर्ण हो चुका तो मौलाना अब्दुल करीम साहिब सयालकोटी ने एक मज्लिस में हज़रत अकदस से अर्ज़ किया कि इस पुस्तक के साथ मुस्लमान फ़िर्क़ों और पीरज़ादों पर समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए एक पत्र भी प्रकाशित होना चाहीए। हुज़ूर ने यह सुझाव बहुत पसंद किया। आपका इरादा था कि यह पत्र उर्दू में लिखा जाए लेकिन रात को कुछ इल्हामी संकेतों में आपको अरबी में लिखने की तहरीक हुई और अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ करने पर आपको रात ही रात में अरबी की चालीस हज़ार धातुएं सिखाई गईं। इसलिए आपने उसी इल्हामी शक्ति से "अल्तबलीग़" के नाम से अरबी भाषा की उच्च कोटि में एक पत्र लिखा जिसमें आपने हिंदुस्तान, अरब, ईरान, तुर्की, मिस्र और अन्य देशों के पीरों,गद्दी पर बैठे हुए, ज़ाहिदों, सूफ़ियों और फ़कीरों और साधूओं तक सच्चाई का सन्देश पहुंचा दिया। "अल्तबलीग़" के बाद अरबी भाषा में हज़ूर ने वे बेनज़ीर लिटरेचर पैदा किया कि अरब भाषा के विद्वानों और अन्य भाषों के विद्वानों की ज़बानें इस के मुक़ाबले में गूंगी हो गईं। "अल्तबलीग़" के सम्बन्ध में एक अरब विद्वान् ने कहा कि इसे पढ़ कर ऐसा आनदं आया कि दिल में आया कि सिर के बल झूमता हुआ क़ादियान पहुँच जाऊं। त्राबुलस के एक प्रसिद्ध विद्वान् सय्यद मुहम्मद सईदी शामी ने इसे पढ़ते ही बेसाख़ता कहा। ख़ुदा की कसम ऐसे वाक्यांश अरब नहीं लिख सकते। और अंततः इसी से प्रभावित हो कर अहमदियत स्वीकार कर ली। हज़रत अक़दस फ़रमाया करते थे। कि हमारी जितनी अरबी तहरीरें हैं ये सब एक रंग की इल्हामी ही हैं क्योंकि सब ख़ुदा की विशेष सहायता से लिखी गई हैं। फ़रमाते थे कभी कबार मैं कई शब्दों और वाक्यांश लिख जाता हूँ परन्तु मुझे उनके अर्थ नहीं आते। फिर लिखने के बाद शब्दकोष देखता हूँ तो पता लगता है।

इन पुस्तकों का यह एजाज़ी रंग देखकर वरोधी उल्मा को यक़ीन ही नहीं आता था कि यह आपकी रचनाएँ हैं निश्चित रूप से समझते थे कि आपने इस उद्देश्य के लिए उल्मा का कोई ख़ुफ़ीया गिरोह नोकरी पर रखा हुआ है इसलिय एक दफ़ा एक मौलवी-साहब इस "ख़ुफ़ीया गिरोह" का सुराग़ लगाने के लिए क़ादियान आए और रात के वक़्त मस्जिद मुबारक में गए। मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूर थलवी उन दिनों मस्जिद मुबारक से जुड़े कमरे में रहते थे मौलवी-साहब ने हज़रत मुंशी साहिब से पूछा कि मिर्ज़ा साहिब की अरबी तसानीफ़ ऐसी हैं कि उन जैसा कोई उच्च कोटि का वाक्यांश नहीं लिख सकता ज़रूर मिर्ज़ा साहिब कुछ उल्मा से मदद लेकर लिखते होंगे और-वह समय रात ही का हो सकता है तो क्या रात को कुछ व्यक्ति ऐसे आपके पास रहते हैं जो इस काम में मदद देते हों हज़रत मुंशी साहिब ने कहा मौलवी मुहम्मद चिराग़ साहिब और मौलवी मुईन साहिब ज़रूर आप के पास रहते हैं यही उल्मा रात को सहायता करते होंगे। हज़रत अकदस को मुंशी साहिब की यह आवाज़ पहुंच गई और हुज़ूर बहुत हँसे। क्योंकि मौलवी मुहम्मद चिराग़ साहिब और मौलवी मुईनुद्दीन साहिब दोनों हुज़ूर के अनपढ़ सेवकों में से थे इसके बाद मौलवी-साहब उठकर चले गए। अगले दिन जब हुज़ूर अस्र के बाद मस्जिद में पहले के अनुसार बैठे तो वहां पर मौलवी-साहब भी मौजूद थे। हज़ूर मुंशी साहिब की तरफ़ देखकर मुस्कुराए और फ़रमाया वे रात वाले उल्मा उन्हें दिखला भी तो दो। उस वक़्त हुज़ूर ने मौलाना अब्दुल करीम साहिब को भी रात की घटना सुनाई वह भी हँसने लगे हज़रत मुंशी साहिब ने मुहम्मद चिराग़ और मुईनुद्दीन को बुला कर उस मौलवी-साहब के सामने खड़ा कर दिया वह मौलवी-साहब उन दोनों "उल्मा" को देखकर चले गए और एक बड़े थाल में मिठाई ले आए और अपने बारह साथीयों समेत हुज़ूर के पवित्र हाथों पर बैअत करली।

(तारीखे अहमदियत, भाग प्रथम, पृष्ठ 472 से 475 मुलख़्ख़स)

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई
चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण की भविष्यवाणी की रोशनी में

(हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़, मुबल्लिग़ सिलसिला, नज़ारत नश्र-व-इशाअत क़ादियान)

हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जहां यह भविष्यवाणी की थी कि जब मुस्लमान अमली तौर पर कमज़ोर हो जाएंगे तो इस्लाम तनज़्ज़ुल का शिकार होगा, वहीं उम्मत मुस्लिमा को यह ख़ुशख़बरी भी दी थी कि ऐसे वक़्त में इस्लाम के प्रभुत्व के लिए अल्लाह तआला इमाम महदी को भेजेगा। ऐसे महदी की पहचान के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ निशानीयों का वर्णन फ़रमाया है ताकि मुस्लमान उस महदी की बैअत करके अध्यात्मिक तरक़्क़ी हासिल कर सकें।

चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण के निशान की महान भविष्यवाणी

इमाम बाक़िर ने अपनी हदीस की पुस्तक सुंन दारुल क़ुतनी में निमंलिखित वर्णन की है।

'' عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ ،قَالَ :إِنَّ لِمَهْدِيِّنَا آيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ، تَنْكَسِفُ الْقَمَرُ لأَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَمَضَانَ، وَ تَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِ النِّصْفِ مِنْهُ، وَلَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلَقَ اللهُ السَّمٰوَاتِ وَ الأَرْضَ ''

(سُنَنُ الدَّارقطنی کتاب العیدین باب صفة صلوٰة الخسوف والکسوف)

अनुवाद : मुहम्मद बिन अली रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : निसंदेह हमारे महदी के लिए दो निशानीयां हैं जो पृथ्वी और आकाश के बनने से लेकर आज तक प्रकट हुए, चन्द्र को रमज़ान के महीना में उसकी ग्रहण की रातों में से पहली रातों को ग्रहण लगेगा जबकि सूर्य को उसके मध्य की तिथि में ग्रहण लगेगा। और यह पृथ्वी और आकाश के बनने से लेकर आज तक प्रकट में नहीं आएं।

पूर्व ग्रन्थों में इस निशान की भविष्यवाणी मौजूद है और अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में भी इस निशान का वर्णन फ़रमाया है। अल्लाह फ़रमाता है

وَخَسَفَ الْقَمَرُ۔وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۔

(अल्कियामा 9 ता 10) अर्थात और चन्द्र ग्रहण जाएगा और सूर्य और चन्द्र इकट्ठे किए जाऐंगे।

इसके अतिरिक्त मुस्लमानों के दो बड़े फ़िरक़े शीया और सुन्नी दोनों की हदीस की कुतुब में निशान चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण महदी के आने की निशानी का निशान ठहराया गया था।

चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण के निशान का प्रकटन

विशेषता मुस्लमानों की ओर से उल्मा की ओर से जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अत्यधिक इन्कार किया गया तो नुसरत इलाही के लिए आप ने निहायत विनम्रता से अल्लाह तआला के समक्ष एक लंबी दुआ की है। (नूरुल हक़, हिस्सा अव्वल, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 8 पृष्ठ 184) इस दुआ पर मुश्किल से एक महीना गुज़रा होगा कि अल्लाह तआला ने आपकी इन गिड़गिड़ा कर की जाने वाली दुआ को क़बूल फ़र्मा लिया और अल्लाह तआला ने आपकी सच्चाई पर चन्द्र और सूर्य को दो आसमानी गवाह बना दिया। इसलिए ठीक चौधवीं सदी के सिर पर चन्द्र ग्रहण के लिए निधारित तिथिों (13,14,15) में से पहली रात अर्थात तेराह रमज़ान 1311 हिज्री के अनुसार 21 मार्च 1894 ई. को और सूर्य ग्रहण के लिए निधारित तिथिों (27,28,29) में से मध्य की तिथि अर्थात 28 रमज़ान के अनुसार 6 अप्रैल 1894 ई. को ग्रहण लगा। अगले वर्ष अर्थात 1895 ई. में यही महान निशान अमरीका में भी ज़ाहिर हुआ। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़ी ललकार के साथ अपनी सच्चाई में इस निशान को प्रस्तुत करते हुए तहरीर फ़रमाया। ''इन तेराह सौ बरसों में बहुत से लोगों ने महदी होने का दावा किया परन्तु किसी के लिए यह आसमानी निशान ज़ाहिर नहीं हुआ..... मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसने मेरे सत्यापन के लिए आसमान पर ये निशान ज़ाहिर किया .... मैं ख़ाना काअबा में खड़ा हो कर पवित्र क़ुरआन की कसम खा कर कह सकता हूँ कि इस निशान से सदी की नियुक्ति हो गई है क्योंकि जब कि यह निशान चौधवीं सदी में एक व्यक्ति के सत्यापन के लिए ज़हूर में आया तो निश्चित हो गया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महदी के ज़हूर के लिए चौधवीं सदी ही क़रार दी थी। ''

(तोहफ़ा गोल्ड़विया, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 17 पृष्ठ 142)

आप अपने लेख में फ़रमाते हैं :-

نیز بِشنو اَز زمیں آمد امامِ کامگار
اِسْمَعُوْا صَوْتَ السَّمَآءِ جَآءَ الْمَسِیْح جَآءَ الْمَسِیْح

(درثمین اردو)

क़ादियान में सूर्य ग्रहण का दृश्य

जब चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का निशान ज़ाहिर हुआ तो विशेषता मक्का वाले ख़ुशी से उछलने लगे कि अब इस्लाम की तरक़्क़ी का वक़्त आ गया है और इमाम महदी पैदा हो गए हैं। इसके अतिरिक्त समस्त इस्लामी देशों में भी बड़ी ख़ुशीयां मनाई गईं। चन्द्र ग्रहण लगने के बाद सूर्य ग्रहण के देखने के लिए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ग्रहण की नमाज़ पढ़ने की नीयत से कई सहाब रज़ियल्लाहु अन्हु क़ादियान तशरीफ़ लाए थे। इसलिय हज़रत मिर्ज़ा अय्यूब बैग़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि :-

"रमज़ान के महीने में चन्द्र और सूर्य ग्रहण लगने की भविष्यवाणी दारुल क़ुतनी इत्यादि हदीसों में महदी के निशान के तौर पर वर्णन हुई। मार्च 1894ई. में पहले चन्द्र के महीने रमज़ान में गहनाया। जब इसी रमज़ान में सूर्य को ग्रहण लगने के दिन क़रीब आए तो दोनों भाई इस इरादे से कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ यह निशान देखें और ग्रहण की नमाज़ अदा करें, हफ़्ते की शाम को लाहौर से रवाना हो कर क़रीबन ग्यारह बजे रात बटाला पहुंचे। अगले दिन 6 अप्रैल 1894ई. को सुबह सुबह ग्रहण लगना था। आंधी चल रही थी। बादल गरजते और बिजली चमकती थी। हवा उलट थी और मिट्टी आँखों में पड़ती थी। क़दम अच्छी तरह नहीं उठते थे। और रास्ता केवल बिजली के चमकने से नज़र आता था। साथ आपके वतन वाले दोस्त मौलवी अब्दुल अली साहिब भी थे। (मिर्ज़ा मसूद बेग़ साहब वर्णन करत हैं कि मौलवी अब्दुल अली साहब मरहूम मिर्ज़ा अय्यूब बेग़ साहब के एक साथ उठने बेठने वाले और एक मुहल्ले के थे) सबने इरादा किया कि चाहे कुछ भी हो रातों रात क़ादियान पहुंचना है। इसलिए तीनों ने रास्ते में खड़े हो कर निहायत दर्द से दुआ की कि हे अल्लाह! जो ज़मीन और आसमान का सर्वशक्तिमान ख़ुदा है हम तेरे विनीत बंदे हैं। तेरे मसीह अलैहिस्सलाम के दर्शन के लिए जाते हैं और हम पैदल यात्रा कर रहे हैं। सर्दी है। तू ही हम पर रहम फ़र्मा। हमारे लिए रास्ता आसान कर दे और इस विरोधी हवा को दूर कर। अभी आख़िरी शब्द दुआ का मुँह में ही था कि हवा ने सिम्त बदल ली और सामने के आने के बजाय पीछे की तरफ़ से चलने लगी और यात्रा में सहायक बन गई। ऐसा मालूम होता था कि हवा में उड़े जा रहे हैं। थोड़ी ही देर में नहर पर पहुंच गए। इस

जगह कुछ बूँदा-बाँदी शुरू हुई। नहर के पास एक कोठा था इस में दाख़िल हो गए। उन दिनों में गुरदासपुर ज़िले की अधिकतर सड़कों पर डकैती की वारदातें होती थीं। लालटेन जला कर देखा तो कोठा ख़ाली था और उसमें दौ ऊपले और एक मोटी ईंट पड़ी थी। हर एक ने एक एक सिरहाने रखी और ज़मीन पर सो गए। कुछ देर बाद आँख खुली तो सितारे निकले हुए थे आसमान साफ़ था और बादल और आंधी का नाम-ओ-निशान न था। इसलिए फिर रवाना हुए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर पर सुबह का खाना खाया।

सुबह हज़रत अक़दस के साथ ग्रहण की नमाज़ पढ़ी जो कि मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही ने मस्जिद मुबारक की छत पर पढ़ाई। क़रीबन तीन घंटे यह नमाज़ इत्यादि जारी रही। कई दोस्तों ने शीशे पर स्याही लगाई हुई थी जिस में से वे ग्रहण देखने में व्यस्त थे। अभी हल्की सी स्याही शीशे पर शुरू हुई थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम को किसी ने कहा कि सूर्य को ग्रहण लग गया है। आप ने उस शीशे में से देखा तो निहायत ही ख़फ़ीफ़ सी स्याही मालूम हुई। हज़ूर ने अफ़सोस का इज़हार करते हुए फ़रमाया कि इस ग्रहण को हमने तो देख लिया परन्तु यह ऐसा हल्का है कि लोगों की नज़र से छुपा रह जाएगा और इस तरह एक महान भविष्यवाणी का निशान संदिग्ध हो जाएगा। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने कई बार इस का वर्णन किया। थोड़ी देर बाद स्याही बढ़नी शुरू हुई यहा तक कि सूर्य का ज़्यादा हिस्सा काला हो गया।''

(असहाबे अहमद,भाग 1 पृष्ठ 92 से 94 रिवायत हज़रत मिर्ज़ा अय्यूब बैग़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु)

ग्रहण का निशान देखकर बैअत करने वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की घटनाएँ

इमाम महदी की सच्चाई के निशान के तौर यह भविष्यवाणी काफ़ी प्रसिद्ध प्रचलित हो चुकी थी। इसलिए जब यह निशान प्रकट हुआ तो कुचरित्र उल्मा ने अपने तरीके के अनुसार इन्कार से काम लिया और मुस्लमानों को सच्चाई के स्वीकार करने से जहाँ तक सम्भव था रोकने की कोशिश की, लेकिन हज़ारों पवित्र स्वभाव लोगों को अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली है इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''हमारे लिए चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का निशान ज़ाहिर हुआ और कई सौ व्यक्ति इस को देखकर हमारी जमात में दाख़िल हुए और इस चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण से हमको ख़ुशी पहुंची और मुख़ालिफ़ों का अपमान हुआ। क्या वे कसम खा कर कह सकते हैं कि उनका दिल चाहता था कि ऐसे अवसर पर जो हम महदी मौऊद का दावा कर रहे हैं चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण हो जाए और अरब देशों में इस का नाम-ओ-निशान न हो और फिर जबकि मर्ज़ी के विरुद्ध प्रकट हो गया तो निसंदेह उनके दिल-दुखी होंगे और इसमें अपना अपमना देखते होंगे।''

(अनवारुल इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 9 पृष्ठ 33)

इस ज़बरदस्त निशान को देखकर अहमदियत में दाख़िल होने वाले नेक स्वभाव वालों की बहुत सी घटनाएँ मिलती हैं। दौ घटनाओं का वर्णन किया जाता हैं :- (1) हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्वयं अपना व्यक्तिगत अनुभव वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :-

''बहुत पुरानी बात है। संभवत: 1966 ई. की। मैं सरगोधा के इलाक़े में वक़्फ़-ए-आरिज़ी पर गया तो एक दूर दराज़ गांव में जाने का संयोग हुआ। वहां एक बहुत बूढ़ी औरत मिली। जब हमने अपना परिचय कराया कि रब्वाह से आए हैं, अहमदी हैं तो उन्होंने बताया कि मैं भी अहमदी हूँ और हम लोग चन्द्र सूर्य ग्रहण को देख कर उस ज़माने में अहमदी हुए थे। यह कहती हैं मैं छोटी थी और मेरे माता पिता उस समय जीवित थे। इस इलाक़े में बिल्कुल जंगल में, दिहात में, देहाती अनपढ़ लोग भी चन्द्र सूर्य ग्रहण का निशान देखकर अहमदी हो गए। तो अल्लाह ने बहुत से लोगों को उस ज़माने में भी इस निशान से हिदायत दी थी।''

(ख़ुत्बा जुम्आ 30 जून 2006 ई.)

(2) ''हज़रत ग़ुलाम मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि विनीत के गांव में पहले-पहल एक साहिब मौलवी बदरुद्दीन साहिब नामी थे। उन दिनों में फ़िद्दी की आयु क़रीबन पंद्रह वर्ष की होगी। विनीत मौलवी बदरुद्दीन साहिब के घरके सामने उनके साथ खड़ा था कि दिन में सूर्य को ग्रहण लगा और मौलवी-साहब ने फ़रमाया सुब्हानल्लाह महदी साहिब के निशानात प्रकट हो गए और उनकी आमद का वक़्त आ पहुंचा। कुछ समय के गुज़रने के बाद मौलवी साहब अहमदी हो गए। मौलवी-साहब बहुत ही मुख़लिस और नेक फ़ित्रत और श्रद्धा से परिपूर्ण थे। उन्होंने अपने माता पिता और पत्नी को एक वर्ष तक कोशिश करके अहमदी किया।'' (ख़ुत्बा जुम्आ 20 मार्च 2015 ई.)

चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण के निशान का इन्कार करना ख़ुदा के प्रकोप को आवाज़ देना है

यह महान निशान ज़ाहिर हो कर आज क़रीबन 125 वर्ष गुज़र चुके हैं, लेकिन अफ़सोस है कि आज भी मुस्लमान और अन्य धर्मों वाले अभी तक संसार में वादे के अनुसार आने वाले के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अत: ख़ुदा के उस भेजे हुए का इन्कार ख़ुदा के प्रकोप को आवाज़ देना है। हज़रत अमीरुल-मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं।

''जब यह निशानियां पूरी हो रही हैं तो मसीह के आने की प्रतीक्षा अभी तक क्यों हो रही है। मसीह को क्यों क़ियामत से मिलाने की कोशिश की जाती है। केवल एक ज़िद है, हठ है। अल्लाह ही है जो उनको अक़्ल दे। फिर एक हदीस है मसीह की आमद के निशान के तौर पर और यह ऐसी हदीस है कि उसे जब भी अहमदी पेश करते हैं तो विरोधियों के पास इसका कोई रद्द नहीं होता। और वह है सूर्य और चन्द्र ग्रहण की। और इस निशान को हम हज़रत मसीह मौऊद की सदाक़त के तौर पर पेश करते हैं ..... अत: आइम्मा ने क़ुराआन और हदीस से ज्ञान प्राप्त करके बता दिया कि मसीह मौऊद इस युग मैं होगा पूर्व के और वर्तमान के ओलामा ने कहा कि इस युग के हालात बता रहे हैं मुसलमानों कि यह हालत है कि नबी होना चाहिए पवित्र क़ुराआन ने निशानियाँ बता दी हैं जिन में से कुछ का मैं ने वर्णन किया है यह अंतिम युग की बातें हैं जब यह बाते हो रही हो तो समझ लेना चाहिए कि यह मसीह मौऊद का युग ही है फिर एक रोशन निशान जो चेलेंज के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है जिस की तशरीह इमाम बाकिर ने की है वह बताया कि मसीह मौऊद के वक़्त में सूर्य और चन्द्र ग्रहण लगना था। तो फिर यह कहना कि अभी मसीह मौऊद के आने का वक़्त नहीं आया स्वयं एक ग़ज़ब को आवाज़ देने वाली बात है।''

(ख़ुतबा जुमा 3 फरवरी 2006 उद्धरित ख़ुतबाते मसरूर, जल्द 4 पृष्ठ 72)

''आसमां मेरे लिए तू ने बनाया एक गवाह
चाँद और सूरज हुए मेरे लिए तारीक व तार
साफ़-दिल को कसरत-ए-एजाज़ की हाजत नहीं
एक निशाँ काफ़ी है गर दिल में है ख़ौफ़े क़िर दिगार
है कोई काज़िब जहां में लाओ लोगो कुछ नज़ीर
मेरे जैसी जिस की ताईदें हुई हों बार-बार''

दुआ है कि अल्लाह तआला मुस्लमानों को और अन्य धर्मों को भी इस महान निशान को समझने और वादे के अनुसार संसार के इस अवतार को क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई पूर्व के बुज़ुर्गों की भविष्यवाणियों की रौशनी में

(मामूनुर्रशीद तबरेज़, मुरब्बी सिल्सिला, विभाग तारीखे अहमदियत क़ादियान)

संसार में जब भी कोई मौऊद नबी या रसूल आया है, उसके आने की ख़बरें ख़ुदा तआला उसके आने होने से पूर्व ही अपने नेक बंदों को दे देता है और यह ख़बरें ख़ुदा तआला के प्रिय ऋषि मुनि आने वाली नसलों के लिए भविष्यवाणियों के रंग में सुरक्षित कर जाते हैं। इन भविष्यवाणियों में मौऊद नबी की आमद का समय भी वर्णन किया होता है और स्थान भी। इसके अतिरिक्त भविष्यवाणियों में वादे वाले युग की निशानीयां और विशेषताएं का भी वर्णन किया जाता है। बाइबल में जगह जगह हज़रत ईसाई अलैहिस्सलाम के बारे में भी और हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में बनी इस्राईली नबियों की भविष्यवाणियां मिलती हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत के उल्मा के लिए फ़रमाया :-

عُلَمَآءُ اُمَّتِیْ کَاَنْبِیَآءِ بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ

अर्थात मेरी उम्मत के उल्मा बनी इस्राईल के नबियों की भांति होंगे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में जो बुज़ुर्गान और औलिया गुज़रे हैं उन्होंने आने वाले मौऊद मसीह व महदी के सम्बन्ध में उनके जन्म से पूर्व ही बनी इस्राईल के नबियों की भंति भविष्यवाणियां कीं। ये वे भविष्यवाणियां थीं जो हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने पर चमकते हुए दिन की भांति पूरी हुईं और आप की सच्चाई पर एक निशान बन गईं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"बहुत से अहले कशफ़ मुस्लमानों में से जिनका शुमार हज़ार से भी कुछ ज़्यादा होगा, अपने मुकाशफ़ात के द्वारा से और तथा ख़ुदा तआला के कलाम के प्रमाण से सर्वसहमती से यह कह गए हैं कि मसीह मौऊद का आना चौदहवीं सदी के सिर से कदापि कदापि आगे नहीं बढ़ेगा और संभव नहीं कि एक बड़ा गिरोह अहले कशफ़ का कि जो समस्त अव्वलीन और आख़रीन का समूह है, वे सब झूठे हों और उनके समस्त तर्क भी झूठे हों।" (तोहफ़ा गोल्ड़विया, रूहानी ख़ाज़ायन, भाग 17 पृष्ठ 326)

(1) इन नेक बुज़ुर्गाने उम्मत में से एक अल्लामा अब्दुल वहाब शेरानी रहमतुल्लाह अलैहि देहांत समय 976 हिज्री ने अपनी पुस्तक अल्वाकेआत वल्जवाहर में फ़रमाया है : ''مَوْلِدُہٗ لَیْلَۃَ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ سَنَۃً خَمْسِیْنَ وَ مِئَتَیْنِ بَعْدَ الْاَلْفِ'' अर्थात ईमाम महदी अलैहिस्सलाम की पैदाइश 1250 हिज्री में होगी।

(नूरुल अबसार फ़ी मनाक़िब ऑल बैअतुन्नबी मुख़्तार)

(2)12वीं सदी के मुजद्दिद हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैहि को स्वयं ख़ुदा ने इलम दिया था कि

''اَلْمَھْدِیُّ تَھَیَّأَ لِلْخُرُوْجِ''

अर्थात इमाम महदी आने को तैयार है।

(तफ़हीमाते ईलाहिया, भाग 2 पृष्ठ 123)

नवाब सिद्दीक़ हस्न ख़ान साहब ने अपनी पुस्तक हिज्जजुल किरामा फ़ी आसारिल कियाम 394 पर इमाम महदी अलैहिस्सलाम के ज़हूर के समय के बारे में लिखा है, फ़ारसी वाक्यांश का उर्दू अनुवाद यह है :-

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने इमाम महदी अलैहिस्सलाम की तिथि ज़हूर शब्द "चिराग़ दीन" में वर्णन फ़रमाई जो कि अबजद के शब्दों के अनुसार 1268 होते हैं।

(3) नवाह दिल्ली में तक़रीबन आठ सौ वर्ष पूर्व एक बा-कमाल और साहिब कशफ़-ओ-करामात बुज़ुर्ग हज़रत नेअमतुल्लाह शाह वली रहमहुल्लाह गुज़रे हैं। उनके प्रसिद्ध फ़ारसी क़सीदा में आख़िरी ज़माना के हालात का वर्णन मिलता है। आप फ़रमाते हैं :-

महदी वक्त व ईसा दौरां
हर दो रा शाहसवार में बीनम

अर्थात उस समय के महदी और ईसा को मैं शाहसवार देखता हूँ। (अर-बाईन फ़ी अहवाल अलमहदीयीन, प्रकाशन 1268 असली क़सीदा' प्रकाशन मकतबा पाकिस्तान लाहौर)

(4) हज़रत शैख़ मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमहुल्लाह देहांत का समय 638 हिज्री ने 628 में फ़रमाया :-

وَیَکُوْنُ ظُھُوْرُہٗ بَعْدَ مَضِیِّ خ ف ج مِنَ الْھِجْرَۃِ

''अर्थात इमाम महदी का ज़हूर सन हिज्री के अनुसार "ख फ ज" के गुज़रने पर होगा। (मुक़द्दमा इब्ने ख़ुलदून, पृष्ठ 354 अनुवाद मौलाना सईद हसन ख़ान यूसुफ़ी फ़ाज़िल)

ख फ ज की संख्या अबजद के हिसाब से 683 बनती हैं (ख 600 फ 80 ज 3) जबकि यह कथन 628 हिज्री का है इस तरह 628 को यदि 683 से जोड़ा जाए तो बाद हिज्री 1311 वर्ष बनते हैं जो महदी के निशान चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का वर्ष है।

(5)एक ईरानी बुज़ुर्ग शेख़ अली असग़र बरोजरदी जो बड़े बड़े ख़ताबात के हामिल और बहुत सी कुतुब के लेखक हैं, अपनी पुस्तक नूरुलअनवार पृष्ठ 215 पर लिखते हैं

(फ़ारसी शेअर का उर्दू अनुवाद यह है) अर्थात वर्ष "सरगी" में यदि तू जीवित रहा तो मुल्क बादशाहत और मिल्लत और धर्म में क्रांति आ जाएगी। सरगी के आदाद अबजद की संख्या के हिसाब से 1290 होते हैं।

(इमाम महदी का ज़हूर मुहम्मद असदुल्लाह कश्मीरी, पृष्ठ 417)

(6) अरब मुल्कों के दौरे पर वहां के उल्मा का इमाम महदी के लिए इंतिज़ार देखकर ख़्वाजा हसन निज़ामी लिखते हैं :-

क्या अजब है कि यह वही समय हो और 1330 में सन्नौई की ख़बर के अनुसार हज़रत इमाम महदी का ज़हूर हो जाए और यदि वह समय अभी नहीं आया तो 40 हिज्री तक ज़हूर बिल्कुल निश्चित है क्योंकि अत्यधिक बुज़ुर्गों की भविष्यवाणियों को मिलाया जाएतो 40 तक सब का इत्तिफ़ाक़ हो जाता है।

(शेख़ सन्नौसी और ज़हूर महदआख़िर ज़मान पृष्ठ अंतिम)

(7) हज़रत हाफ़िज़ भाई ख़ान अलैहि रहमतुल्लाह जो स्यालकोट के एक वली बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, मसीह मौऊद की आमद के बारे में फ़रमाते हैं (फ़ारसी कविता का उर्दू अनुवाद इस तरह है)

अर्थात जब हिज्री अन् के पूरे तेराह सौ वर्ष गुज़र जाऐंगे तब हज़रत ईसा का ज़हूर होगा। यहां यह बात काबिल-ए-ग़ौर है कि हज़रत हाफ़िज़ बरख़ुर्दार साहब ईसा के "ज़हूर" के क़ाइल हैं आसमान से उतरने के नहीं।

(8) एक प्रसिद्ध शीया बुज़ुर्ग हज़रत अब्बू सईद ख़ानम हिन्दी गुज़रे हैं। आपने कशफ़ में हज़रत इमाम महदी के दर्शन किए थे। आप पूरा कशफ़ वर्णन करने के बाद आख़िर में हैं :

''کُلُّ ذٰلِکَ بِکَلَامِ الْھِنْدِ''

(साफ़ी शरह उसूल काफ़ी, पुस्तक अल्हिज्जा, बाब मौलिद साहिब अल्ज़मान, भाग 3, हिस्सा 2, पृष्ठ 304) अर्थात कशफ़ में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम ने जिस भाषा में बात की वह सारी हिन्दुस्तानी भाषा में थी।

(इमाम महदी का ज़हूर, पृष्ठ 363)

जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मात्र भाषा पंजाबी थी लेकिन इस में हिन्दुस्तानी में बोली जाने वाली उर्दू ज़बान की ओर संकेत है। आप का ज़्यादा-तर लिटरेचर इसी भाषा में है।

(9)एक और सूफ़ी बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ हसन इराकी ने पुस्तक ग़ायतुल्मकसूद में लिखा है :-

"मैं तुम्हें एक बात सुनाता हूँ .... जब मैं शाम में नौजवानी की हालत में जामें बनी उमय्या में दाख़िल हुआ तो मैंने एक व्यक्ति को कुर्सी पर बैठे

हुए महदी और उसके ख़ुरूज के बारे में बात चीत करते सुना। उस समय से महदी की मुहब्बत मेरे दिल में पड़ गई और मैं दुआ में लग गया कि अल्लाह तआला मुझे उससे मिलाए। अत: में एक वर्ष तक दुआ करता रहा। एक दिन में मग़रिब के बाद मस्जिद में था कि अचानक एक व्यक्ति मेरे पास आया, कि जिसके सिर पर अजमियों (जो अरबी नहीं होते) की पगड़ी बंधी हुई थी और ऊंट के बालों का जुब्बा था। उसने मेरे कंधे को अपने हाथ से छुआ और मुझे कहा, मेरी मुलाक़ात की तुझे क्या ज़रूरत है। मैंने कहा तू कौन है उस ने कहा मैं महदी हूँ, अत: मैंने उसके हाथ चूमे।" (ग़ायतुल्मकसूद, भाग 2, पृष्ठ 81)

इस में मवाउद-ए-ज़माना के अजमी होने की ख़बर दी है। इस हवाले को पहले वाले हवाले से मिलाकर देखें तो मौऊद इमाम के हिंदुस्तान में ज़ाहिर होने की ख़बर आने से पूर्व दी गई।

(10) हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमहुल्लाह जिनके बारे में आता है कि उन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार जो उन्हें स्वप्न में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, एक पुस्तक फ़िसूसुलहकम तहरीर फ़रमाई। इस में भविष्यवाणी फ़रमाई कि आने वाला मौऊद जो ख़ातमुल ओलिया भी है जोड़े में पैदा होगा। इससे पहले एक लड़की पैदा होगी इसके बाद वह पैदा होगा

भविष्यवाणी में बताया गया है कि आने वाला मौऊद ख़ातमुल ओलाद होगा। ख़ातमुल ओलाद के अर्थ ख़ातमुल ओलिया के हैं। दूसरे वह जोड़े में पैदा होगा और इस से पहले एक उसकी बहन पैदा होगी और उसका वतन चीन होगा। अरबी में "अस्सीन" का शब्द प्रयोग हुआ है और यह शब्द अरबी में ग़ैर अरब इलाक़ा या दूर दराज़ के इलाक़ा के लिए भी प्रयोग किया जाता है। यहां भी मौऊद नबी मसीह व महदी का वतन ग़ैर अरब इलाक़ा या दूर दराज़ का होना ही मुराद है।

(फ़िसूसुल हकम, पृष्ठ 36 अनुवादक मौलाना मुहम्मद मुबारक अली हैदराबादी, प्रकाशन 1308 हिज्री, प्रकाशन अहमदी कानपूर)

हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमहुल्लाह की ही एक और रचना "फ़ुतूहाते मक्की" है । इस पुस्तक की तीसरी जिल्द में आने वाले मौऊद के साथी और करीबियों का वर्णन किया गया है । इसलिए लिखा है :-

"वह सब अजमी होंगे। उनमें से कोई अरबी न होगा लेकिन वह अरबी में बात करते होंगे। उनके लिए एक हाफ़िज़-ए-क़ुरआन होगा जो उनके गोत्र से नहीं होगा क्योंकि उसने कभी ख़ुदा की ना-फ़रमानी नहीं की होगी। वह उस मौऊद का ख़ास वज़ीर और बेहतरीन अमीन होगा ।"

(फ़ुतूहाते मक्की, भाग 3, पृष्ठ 364 से 365)

सुब्हान-अल्लाह इस भविष्यवाणी में जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के अस्हाब का वर्णन है वहीं हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ भी स्पष्ट संकेत है।

(11) मुल्तान के एक प्रसिद्ध वली बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ पहारवी ने इलहामे इलाही से ख़बर पाकर मसीह मौऊद की सदाक़त के निशान चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण के लगने के बारे में भविष्यवाणी फ़रमाई (फ़ारसी शेअर का उर्दू अर्थ यह है)

अर्थात 1311 हिज्री हमें सूर्य और चन्द्र को इकट्ठे एक महीने में ग्रहण लगेगा और ये दो निशान सच्चे महदी और झूठे दज्जाल के मध्य अंतर करने का कारण होंगे। इस भविष्यवाणी में सूर्य और चन्द्र ग्रहण का 1311 हिज्री हमें ज़ाहिर होना बताया गया है। ठीक उसी के अनुसार अर्थात 1894 ई. में यह निशान ज़ाहिर हो गया।

ये बुज़ुर्गान उम्मत मुहम्मदिया की वे महान भविष्यवाणियां हैं जोकि मौऊद ज़माना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम की सच्चाई संसार के सामने हमेशा वर्णन करती रहेंगी। अल्लाह तआला इन पूर्व के बुज़ुर्गान की वर्णन की गई ख़बरों पर समस्त मुसलमानों के ईमान लाने की तोफ़ीक प्रदान करे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त को संसार अत्यधिक संख्या में स्वीकार करे आमीन।

पृष्ठ 17 का शेष

पूर्व के ग्रंथों से तथा बुद्धि से इस विषय का झूठा होना साबित किया। (देखें हज़रत मिर्ज़ा साहब की पुस्तकें एक ग़लती का इज़ाला, तोहफ़ा गोल्ड़विया नज़ूले मसीह हकीक्तुल वह्यी इत्यादि)"

(तब्लीग़-ए-हिदायत, पृष्ठ 108 से 109)

क़ुरआन और हदीस का स्थान और महत्त्व

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"फिर क़ुरआन और हदीस के स्थान और महत्त्व के सम्बन्ध में अर्थात इन दोनों में से कौन दूसरे पर निर्णायक है ऐसी बातें प्रस्तुत हुईं है कि उन्हें सुन कर एक मुस्लमान का शरीर काँप उठता है। मुस्लमानों के एक फ़िर्क़ा ने क़ुरआन को पीछे छोड़ दिया था और हदीस के आगे एक बुत की तरह गिर गए थे। आप अलैहिस्सलाम ने इन विषयों पर बड़ी बड़ी सूक्ष्म बहसें कीं और एक तरफ़ तो सुन्नत को हदीस से अलग साबित किया और दूसरी तरफ़ क़ुरआन सुन्नत और हदीस का अलग अलग स्थान प्रमाणों और तर्कों के साथ निर्धारित किया।

(देखो अलहक़ लुधियाना, रिव्यू मुबाहेसा चकड़ालवी, कशती नूह इत्यादि) (तब्लीग़-ए-हिदायत, पृष्ठ 110)

क़ुरआन और हदीस के मर्तबे के हवाले से हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :-

"तेरहवीं ग़लती लोगों को यह लगी हुई थी कि वे समझते थे क़ुरआन करीम हदीसों के अधीन है यहां तक कहते थे कि हदीसें क़ुरआन की आयतों को मन्सूख़ कर सकती हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ग़लती को इस तरह दूर किया कि आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया पवित्र क़ुरआन हाकिम है और हदीसें उसके अधीन हैं। हम केवल वही हदीस मानेंगे जो पवित्र क़ुरआन के अनुसार होगी, अन्यथा रद्द कर देंगे। इसी तरह वे हदीस जो क़ानूने क़ुदरत के अनुसार हो वह स्वीकार करने के योग्य होगी क्योंकि ख़ुदा तआला का कलाम और उस का कर्म अलग अलग नहीं हो सकते।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे, अनवारुल उलूम, भाग 10 पृष्ठ 159 से 160)

आज हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तर्कों की रोशनी में कोशिश करनी चाहिए कि संसार को बतलाएं कि इन विषयों से अलग रह कर वे घाटे में ही जा रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो आकर बुनियादी अक़ायद में निर्णय फ़रमाया है और आप अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त अहमदिया के द्वारा आगे क़यामत तक दूसरे विषयों में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षाओं के अनुसार ही हमेशा मार्ग दर्शन मिलता रहेगा और इस तरह यह उम्मत जमाअत अहमदिया के द्वारा वास्तविक और असल तरक़्क़ी की तरफ आगे क़दम बढ़ाती रहेगी।

हज़रत मुसल्लेह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"यह संसार कुछ दिनों का है और न मालूम कि कौन कब तक जीवित रहेगा आख़िर हर एक को मरना और अल्लाह तआला के समक्ष प्रस्तुत होना है। उस समय सही आस्थाओं और नेक कर्मों के अतिरिक्त और कुछ काम नहीं आएगा। ग़रीब भी इस संसार से ख़ाली हाथ जाता है और अमीर भी न बादशाह अब तक इस संसार से कुछ ले गए न ग़रीब,साथ जाने वाला केवल ईमान है या नेक कर्म। अत: अल्लाह तआला के मामूर पर ईमान लाओ ताकि अल्लाह तआला की तरफ़ से आपको अमन दिया जाए और इस्लाम की आवाज़ को स्वीकार करो ताकि सलामती से आपको हिस्सा मिले।"

(अन्वारुल -उलूम, भाग 7 पृष्ठ 595 से 596 दअवतुल अमीर)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई हकम (मध्यस्थ) और अदल (न्यायकर्ता) के रूप में

(लईक अहमद डार,मुरब्बी सिल्सिला, नज़ारत उलिया क़ादियान)

इतिहास गवाह है कि जब जब संसार में अल्लाह तआला के अवतार आए तो उनका विरोध हुआ और अत्यधिक विरोध हुआ और क्यों हुआ इसलिए कि उन्होंने ज़माने के रीति रिवाजों से हट कर कुछ और दावा किया और उस समय की परम्परा के विरुद्ध ऐलान किया। फिर धीर-धीरे लोगों में से पवित्र लोगों पर उनकी सच्चाई प्रकट हो जाती है और उन्हें ईमान की दौलत प्राप्त हो जाती है और अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजे हुए की सच्चाई चमकते हुए सूर्य की भांति प्रकट हो जाती है। दुश्मनों के सम्बन्ध में अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ

(सूरत यासीन 31)

अनुवाद : हाय अफ़सोस (इन्कार की ओर झुके) बंदों पर कि जब कभी भी उन के पास कोई रसूल आता है वे उसको हीनता की दृष्टि से देखने लग जाते हैं (और हंसी ठट्ठा करने लगते हैं) और इलाही सिलसिलों के प्रभुत्व के सम्बन्ध में दूसरी तरफ़ फ़रमाता है कि كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ (सूरत मुजादला :21)

अनुवाद : अल्लाह ने फ़ैसला कर छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल विजय आएँगे। अल्लाह निसन्देह ताकतवर (और) प्रभुत्व वाला है।

हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों के भविष्य के हालात के बारे में अवगत किया और आख़िरी ज़माना में एक अवतार के आने के सम्बन्ध में भविष्यवाणियां भी फ़रमाई कि एक धर्म का सेवक, अवतार प्रकट होगा जो पद की दृष्टि से मसीह और महदी और हक्म और अदल(न्यायकर्ता) और नबी ख़ुदा से सम्बोधित किया जाएगा और अर्श से उसको अत्यधिक सम्मान से पुकारा जाएगा। उसको मेरा सलाम कहना और उस की बैअत करना। अर्थ यह था कि उसका विरोध करने के लिए तैयार न हो जाना बल्कि उसकी जमाअत में शामिल होना।

ठीक समय पर और युग की ज़रूरत के अनुसार यह आसमानी बादशाह आया और दावा क्या कि मैं मसीह मौऊद और महदी माहूद और हकम और अदल और नबी हूँ जिस पर उसका एक साथ विरोध शुरू हो गया। यह तरीका तो दुहराया जान ही थी क्योंकि पहले से भविष्यवाणियों में बतलाया गया था कि उसका विरोध होगा।

हदीस में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हकम और अदल कह कर विशेषता से फ़रमाया गया था कि समस्त विभिन्न धर्मों में धार्मिक कार्यों में वह हकम और अदल होगा। अत: वह हकम और अदल आया और सब विभिन्न धार्मिक कार्यों में अपना फ़ैसला सुनाया और जो उसकी बात मान गए वे उसकी जमाअत कहलाए और बाक़ी सदैव का घाटा पाने वालों में से हो गए।

कुछ धार्मिक विषयों में बहैसीयत हकम और अदल हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो आदेश जारी फ़रमाए हैं उन में से कुछ सारांश में निमंलिखित है :-

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :-

"पांचवीं ग़लती हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की सलीब की घटना के सम्बन्ध में थी जिस में मुस्लमान और यहूद और ईसाई सब ग्रस्त थे। मुस्लमान कहते थे यहूद ने हज़रत मसीह की अतिरिक्त किसी और को सलीब पर लटका दिया था और उन्हें ख़ुदा ने आसमान पर उठा लिया था। यहूद और ईसाई कहते थे कि हज़रत मसीह को ही सलीब पर लटका कर मार दिया गया था। मुस्लमानों के विचारों को तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस प्रकार खंडित किया कि फ़रमाया :-

हज़रत मसीह की अतिरिक्त किसी और को सलीब पर लटकाना अत्यधिक अत्याचार था। और यदि उस व्यक्ति की मर्ज़ी से लटकाया गया था तो इस का सबूत इतिहास में होना चाहीए। फिर यदि मसीह को ख़ुदा ने आसमान पर उठा लेना था तो किसी और ग़रीब को सलीब पर चढ़ाने की ज़रूरत ही किया थी? अत: यह ग़लत है कि मसीह की जगह किसी और को सलीब पर लटकाया गया। और यह भी कि उन्हें आसमान पर उठाया गया। दूसरी ओर आप ने यहूद और मसीहीयों का भी खण्डन किया कि मसीह सलीब पर मर गया था और प्रमाणित किया कि हज़रत मसीह को सलीब से ज़िन्दा उतार लिया गया था और इस तरह ख़ुदा ने उनको लअनती मौत से बचा लिया।

अब देखो उन्नीस सौ वर्ष के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उस घटना की असल वास्तविकता का पता लगाना कितना बड़ा काम है। विशेषता जब कि हम देखते हैं कि हज़रत मसीह के सलीब पर से ज़िन्दा उतरने के सबूत आप ने स्वयं इंजील से ही दिए हैं। उदाहरणता यह कि हज़रत मसीह से एक बार उस समय के उल्मा ने निशान माँगा था तो उसने उन्हें उत्तर में कहा

"इस ज़माना के बुरे और व्यभिचारी लोग निशान माँगा करते हैं परन्तु युहन्ना नबी के निशान के अतिरिक्त कोई और निशान उनको नहीं दिया जाएगा क्योंकि जैसे यूनाह तीन रात-दिन मछली के पेट में रहा वैसे ही इब्ने आदम तीन रात-दिन ज़मीन के अंदर रहेगा।"

(मति, बाब 12 आयत 39-40)

तौरात से साबित है कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम तीन दिन तक मछली के पेट में जीवित रहे थे और फिर जीवित ही निकले थे। अत: ज़रूरी था कि हज़रत मसीह नासरी भी सलीब की घटना के अवसर पर ज़िन्दा ही क़ब्र में दाख़िल किए जाते और ज़िन्दा ही निकलते। अत: यह विचार कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम सलीब पर मर गए थे इंजील के स्पष्ट विरुद्ध है और स्वयं मसीह का झूठा होना इससे अनिवार्य होता है। ईसाइयत के मुक़ाबले में हज़रत मसीह मौऊद की यह इतना बड़ी युक्ति है कि आपके काम की महानता प्रमाणित करने के लिए अकेले ही काफ़ी है परन्तु आपने इस पर भी रुके नहीं, बल्कि आपने इतिहास से साबित कर दिया है कि हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम सलीब की घटना के बाद कश्मीर आए और वहां आकर फ़ौत हुए अत: उनके समस्त जीवन को रहस्य से निकाल कर प्रकट कर दिया।

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे, अनवारुल-उलूम, भाग 10 पृष्ठ 170 से 171)

ख़त्मे नबुव्वत

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"फिर रिसालत के सिल्सिला के सम्बन्ध में मतभेद था कि हर प्रकार की नबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़त्म हो गई है और अब कोई व्यक्ति चाहे वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ही फ़ैज़ पाने वाला और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही शरीयत का सेवक हो नबी नहीं हो सकता। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद तर्कों से प्रमाणित किया कि ख़ातमुल अंबिया के वे अर्थ नहीं हैं जो समझे गए हैं और रिसालत का सिल्सिला बंद होने से यह अभिप्राय नहीं कि अब किसी किस्म का भी नबी नहीं आ सकता। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद केवल शरीयत वाली नबुव्वत का दरवाज़ा बंद हुआ है परन्तु बिना शरीयत वाला और प्रतिरूप नबुव्वत का दरवाज़ा बंद नहीं हुआ। यदि नबुव्वत के समस्त विभाग बंद और डिस्कनेक्ट समझे जाएँ तो इसके अर्थ ये होंगे कि नऊज़ू बिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वजूद उम्मत मुहम्मदिया से एक महान रहमत और इनाम इलाही के छीने जाने का कारण हुआ है। अत: आप अलैहिस्सलाम ने

शेष पृष्ठ 16 पर

पृष्ठ 1 का शेष

कुछ भी अधिकार है, एक थोड़ा भी अधिकार है तो अब की बार तो हरगिज़ मुंह न फेरें और यदि इस पुस्तक में कुछ ग़लतियां सिद्ध हों तो आप के सामने पुस्तक की ग़लतियों से जितनी अधिक होंगी, प्रति ग़लती आप को एक रुपया दिया जाएगा। 25 जुलाई 1894 ई० तक यह दरख़्वास्त छाप कर किसी इश्तिहार द्वारा न भेजी तो समझ आ जाएगा कि आप इस से भी भाग गए। (सिर्रुल ख़िलाफ़: रूहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 417)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बाद में इस इनाम को बढ़ाकर दो रुपया कर दिया। लेकिन ग़लती निकालने और इनाम लेने के लिए आपने कुछ आवश्यक शर्तें निर्धारित कीं। इस संबंध में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

अधिकतर जल्दबाज़ नुक्ता चीन विशेषता शेख़ मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी जो हमारी अरबी भाषा की पुस्तकों को बुराई की नीयत से देखते हैं दुश्मनी और धार्मिक पक्षपात के लिखने वाले की भूल को भी ग़लती में सम्मिलित कर देते हैं लेकिन वास्तव में हमारी व्याकरणिक या वाक्य की ग़लती केवल वही होगी जिस के विरुद्ध सही तौर पर हमारी किताबों के किसी और स्थान में न लिखा गया हो। परन्तु जब कि एक स्थान पर किसी संयोग से ग़लती हो और वही तरकीब या शब्द दूसरे दस बीस या पच्चास स्थानों में सही तौर पर पाया जाता हो तो यदि इन्साफ़ और ईमान है तो उसको लिखने वाले की भूल समझना चाहिए न कि ग़लती हालाँकि जिस तेज़ी से यह पुस्तक लिखी गई हैं यदि उसको दृष्टिगत रखें तो अपने बड़े अत्याचार के स्वीकारी हों और उन लेखनियों को ख़ुदा की ओर से चमत्कार समझें। क़ुरआन शरीफ़ के अतिरिक्त किसी व्यक्ति का कलाम भूल चूक और ग़लती से ख़ाली नहीं। बटालवी साहिब स्वयं स्वीकार करते हैं कि लोगों ने उमुर्लकैस और हरीरी की लेखनियों में भी ग़लतियां निकालीं हैं परन्तु क्या ऐसा व्यक्ति कि जिस ने संयोग से एक ग़लती पकड़ी उसकी हरीरी या उमुर्लकैस के स्थान पर गिनती हो सकता है। कदापि नहीं। नुक्ता आवरी (नए अर्थ का वर्णन करना) मुश्किल है और नुक्ता-चीनी एक कम सामर्थ्य का व्यक्ति बल्कि एक मंदबुद्धि भी कर सकता है। हमारी ओर से हमाम्तुल बुशरा और नुरुल-हक़ के मुक़ाबले पर रिसाला लिखने के लिए जून 1894 ई के अंत तक मोहलत थी वह गुज़र गई। परन्तु किसी मौलवी ने मुकाबले पर रिसाला लिखने के उद्देश्य से इनाम जमा कराने के लिए दरख़ास्त नहीं भेजी और अब वह वक़्त जाता रहा हाँ उन्होंने नुक्ता-चीनी के लिए जो हमेशा नालायक़ और हसद करने वाले स्वभाव के लोगों का कार्य है बहुत हाथ पैर मारे और कुछ ख़ुश-फ़हम व्यक्ति कुछ लिखने वाले की भूल चूक या कोई संयोग से ग़लती निकाल कर इनाम के उम्मीदवार हुए और तनिक आँख खोल कर यह भी नहीं देखा कि हर एक ग़लती पर इनाम देने के लिए यह शर्त है कि ऐसा व्यक्ति प्रथम मुकाबले पर रिसाला लिखे अन्यथा हसद करने वाले नुक्ता चीनी करने वाले जो अपना व्यक्तिगत सरमाया ज्ञान का कुछ भी नहीं रखते दुनिया में हज़ारों बल्कि लाखों हैं किस-किस को इनाम दिया जाए। चाहिए कि प्रथम उदाहरण के रूप में इस रिसाला सिर्रुल ख़िलाफ़: के मुक़ाबला पर रिसाला लिखें और फिर यदि उनका रिसाला ग़लतियों से ख़ाली निकला और हमारे रिसाला की अलंकारिक शैली में एक समान साबित हुआ तो हम से इनाम के अतिरिक्त रिसाला के मुक़ाबले पर हर एक ग़लती पर दो रुपया भी लें जिसके लिए हम वादा कर चुके हैं अन्यथा यूंही नुक्ता-चीनी करना बेशर्मी होगा। وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰی۔

(सिर्रुल ख़िलाफ़: रूहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 316)

अब हम नीचे सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ वे कथन प्रस्तुत करते हैं जिन से मालूम होगा कि शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी वास्तव में अरबी का कोई गहरा ज्ञान नहीं रखते थे। न कभी उन्होंने अरबी में कोई कविता कही और न कोई किताब लिखी। न ही वह कोई फ़ारसी के विद्वान थे। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"शेख़ बतालवी साहिब ने अपनी समझ में हमारी पुस्तक तब्लीग़ (आईना कमलाते-इस्लाम) की कुछ ग़लतियां निकाली हैं और हम अफ़सोस से लिखते हैं कि हठधर्मी के जोश से या मूर्खता के कारण सही और नियमानुसार तर्कीबों को भी ग़लती में शामिल कर दिया। यदि इस बात के लिए कोई विशेष मज्लिस निर्धारित हो तो हम उनको समझा दें कि ऐसी जल्दबाज़ी से क्या-क्या शर्मिन्दगियां उठानी पड़ती हैं। क़यामत की निशानियां प्रकट हो गईं। यह ज्ञान, और नाम मौलवी इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन। वे ग़लतियां जो उन्होंने बड़ी दौड़-धूप करके निकाली हैं। यदि वे सब इकट्ठी करके लिखी जाएं तो दो या डेढ़ पंक्ति के लगभग होंगी और उनमें से अधिकांश लिखने वाले (कातिब) की भूल हैं और तीन ऐसी ग़लतियां जो पुनर्विचार उपलब्ध न होने के कारण या नज़र के उचटने के कारण रह गई हैं और शेष शेख़ साहिब की अपनी अल्प बुद्धि और समझ का घाटा है, जिस से सिद्ध होता है कि शेख़ साहिब ने कभी अरबी भाषा की ओर ध्यान नहीं दिया, अच्छा था कि चुप रहते और अपने दोषों को प्रकट न कराते। हमें रुचि ही रही कि शेख साहिब हमारी पुस्तकों के मुक़ाबले पर कोई सरस-सुबोध पुस्तक पद्य और गद्य में निकालें और हम से इनाम लें तथा हम से इक़रार करा लें कि वास्तव में वह मौलवी और अरबी जानने वाले हैं।

(सिर्रुल ख़िलाफ़: रूहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 415)

इस स्थान पर यह भी याद रहे कि शेख़ बतालवी ने जितनी इस विनीत की कुछ अरबी पंक्तियों से गलतियां निकाली हैं यदि उनसे कुछ साबित होता तो बस यही कि अब इस शेख़ की निर्लज्जता इस स्तर तक पहुंच गई है कि सही उसकी नज़र में ग़लत और फ़सीह उस की नज़र में ग़ैर फ़सीह दिखाई देता है और मालूम नहीं कि यह नादान शेख़ कहाँ तक अपनी पर्दादरी कराना चाहता है और क्या क्या अपमान उसके नसीब में हैं कुछ ज्ञान वाले साहित्यकार उस की यह बातें सुनकर और उस की इस किस्म की नुक्ता चीनियों को जान कर इस पर रोते हैं कि यह व्यक्ति क्यों इतनी अज्ञानता के दलदल में फंसा हुआ है।

(करामातुस्सादेक़ीन रूहानी ख़ज़ायन भाग 7 पृष्ठ 63)

"मैं पाठकों को विश्वास दिलाता हूँ कि शेख़ बतालवी अरबी के ज्ञान से पूर्णता अज्ञान है ग़लतियों का निकालना उन लोगों का काम होता है जो नए कलाम और पुरानी अरबी पर गहरी नज़र रखते हो और मुहावरा और गैर मुहावरा पर उनको ज्ञान हो और हज़ारों पंक्तियाँ अरबी की उनकी नज़रों के सामने हों और अनुसरण और निष्कर्ष निकलने की प्रतिभा उनको प्राप्त हो परन्तु यह बेचारा शेख़ जिसने उर्दू लिखने में बाल सफ़ैद किए हैं साहित्य और व्याकरणिक शैली को क्या जाने। कभी किसी ने देखा या सुना कि कोई दो-चार सौ पंक्तियाँ अरबी में इस बुज़ुर्ग ने कविता के रूप में लिख करके प्रकाशित की हों और मुझे तो कदापि कदापि इस क़दर भी उम्मीद नहीं कि एक पंक्ति भी साहित्य के शैली और व्याकरणिक शैली से परिपूर्ण भी बना सकता हो या एक लाइन साहित्य के शैली और व्याकरणिक शैली से परिपूर्ण अरबी में लिख सकता हो हाँ उर्दू पढ़ने वाले आवश्य हैं।" (करामातुस्सादेक़ीन रूहानी ख़ज़ायन भाग 7 पृष्ठ 64)

अगले शुमारा में इंशाअल्लाह सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक और इनामी चैलेंज हम पाठको की सेवा में पेश करेंगे।

(मन्सूर अहमद मसरूर)

(अनुवादक सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

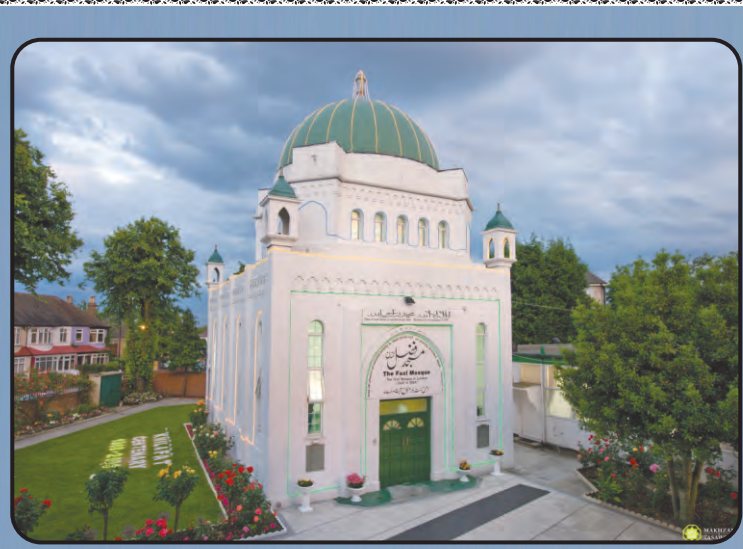

मस्जिद फ़ज़्ल (लंदन, यू.के.)

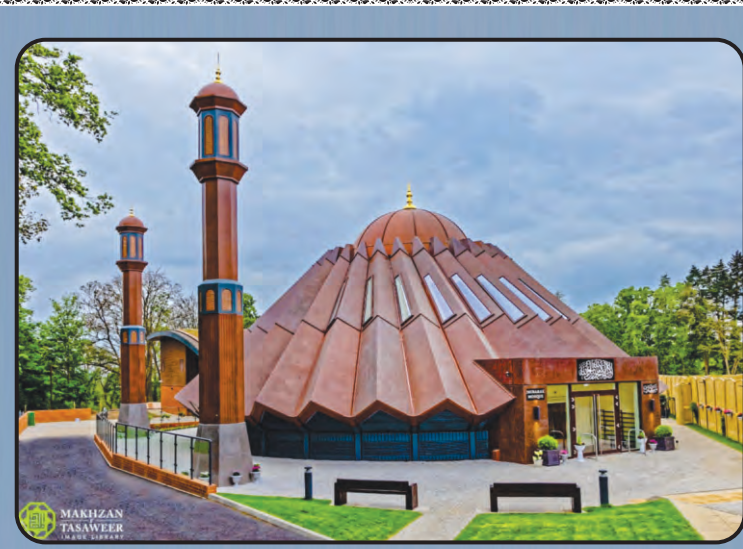

मस्जिद मुबारक (इस्लामाबाद, यू.के.)

मस्जिद अक़्सा (रब्वाह, पाकिस्तान)

मस्जिद नुसरतजहाँ (कोपेनहेगन, डेनमार्क)

मस्जिद बैतुल अहद (नगोया, जापान)

मस्जिद मसरूर (वर्जीनिया, अमरीका)

मस्जिद बैतूल हमीद (फुलडा, जर्मनी)

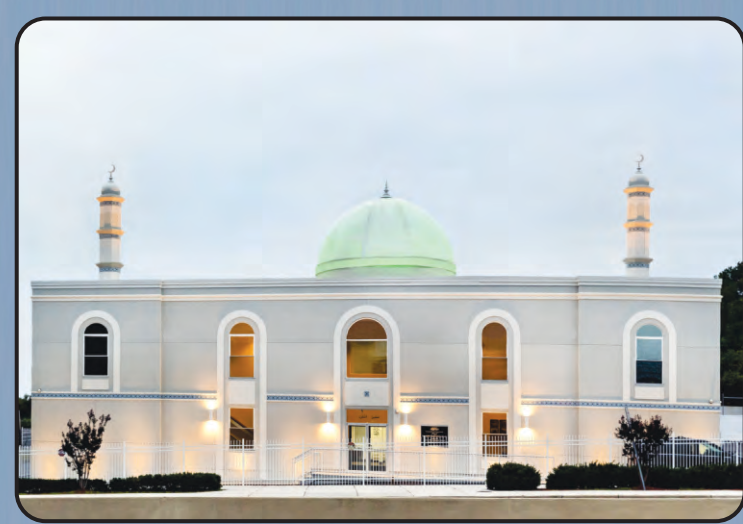

मस्जिद बैतुल समद (बाल्टीमोर, अमरीका)

विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया संसार के 213 देशों में स्थापित हो चुकी है अल्हम्दुलिल्लाह।
संसार के विभिन्न देशों में जमाअत अहमदिया की ओर से बनने वाली मस्जिदों के सुंदर चित्र

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

The Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No. GDP 45/2020-2022 | Vol. 6 Thursday 4,11 March 2021 Issue No. 9-10

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हदीस में वर्णन किया गया है कि मसीह मौऊद का अवतरण मिनार के पास दमिश्क़ के पूर्व की ओर होगा।

दोस्तो ! यह मिनारा इसलिए तैयार किया जाता है ताकि हदीस के अनुसार मसीह मौऊद के युग की यादगार हो

यह मिनारतुल मसीह भी दमिश्क़ से पूर्व की ओर स्थित है।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"हे दोस्तो यह मिनारा इसलिए तैयार किया जाता है ताकि हदीस के अनुसार मसीह मौऊद के ज़माना की यादगार हो और अत: वह महान भविष्यवाणी पूरी हो जाए जिसका वर्णन क़ुर्आन शरीफ़ की इस आयत में है कि سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ और जिस के मिनारा का वर्णन हदीस में भी है कि मसीह का अवतरण मिनारे के पास होगा। दमिश्क़ का वर्णन इस हदीस में जो मुस्लिम ने वर्णन किया है, इस उद्देश्य से है कि तीन ख़ुदा बनाने का बीजारोपण प्रथम दमिश्क़ से आरंभ हुआ है और मसीह मौऊद का अवतरण इस उद्देश्य से है कि ताकि तीन के विचारों को मिटा कर फिर एक ख़ुदा का प्रताप संसार में स्थापित करे। अत: इस संकेत के लिए वर्णन किया गया कि मसीह का मिनारा जिस के निकट उसका अवतरण होगा, दमिश्क़ से पूर्वी ओर है और यह बात स्पष्ट भी है क्योंकि क़ादियान जो ज़िला गुरदासपुर पंजाब में है, लाहौर जो इसके पश्चिम और दक्षिण में स्थित है वह दमिश्क़ से ठीक-ठीक पूर्व की ओर है। अत: इससे सिद्ध हुआ कि यह मिनारतुल मसीह भी दमिश्क़ से पूर्व की ओर स्थित है। प्रत्येक सत्याभिलाषी को चाहिए कि दमिश्क़ के शब्द पर अत्यंत विचार करें कि इसमें रहस्य क्या है कि यह लिखा गया है कि मसीह मौऊद दमिश्क़ के पूर्वी ओर अवतरित होगा ..... अब हमारे विरोधी चाहे उस दमिशूक की हदीस को बार-बार पढ़ते हैं .... उन्होंने केवल एक कहानी के समान इस हदीस को समझ लिया है लेकिन याद रहे कि यह कहानी नहीं है और ख़ुदा तआला व्यर्थ कार्यों से पवित्र है बल्कि इस हदीस के इन शब्दों में जो प्रथम दमिश्क़ का वर्णन फ़रमाया और फिर उसके पूर्वी ओर एक मिनारा वर्णन किया, एक महान रहस्य है और वह वही है जो अभी हम वर्णन कर चुके हैं अर्थात यह कि तस्लीस और तीन ख़ुदाओं की बुनियाद दमिश्क़ से ही पड़ी थी ..... यह बड़े शिर्क का खेत प्रथम दमिश्क़ में ही बढ़ा और फूला और फिर यह ज़हर अन्य स्थानों में फैलता गया। अत: क्योंकि ख़ुदा तआला को ज्ञात था कि इन्सान को ख़ुदा बनाने का बुनियादी पत्थर प्रथम दमिश्क़ में ही रखा गया इसलिए ख़ुदा ने इस ज़माना का वर्णन करते समय कि जब ख़ुदा तआला का स्वाभिमान इस झूठी शिक्षा का विनाश करेगा, फिर दमिश्क़ का वर्णन किया और कहा कि मसीह का मिनारा अर्थात उसके नूर के प्रकट होने का स्थान दमिश्क़ के पूर्वी ओर है। इस आलेख से यह अर्थ नहीं था कि वह मिनारा दमिश्क़ का एक भाग है और दमिश्क़ में स्थित है जैसा कि दुर्भाग्यवश समझा गया। बल्कि अर्थ यह था कि मसीह मौऊद का नूर सूर्य की तरह दमिश्क़ के पूर्वी ओर से उदय होकर पश्चिमी अंधकार को दूर करेगा। और यह एक सूक्ष्म संकेत था क्योंकि मसीह के मिनारे को जिसके निकट उसका अवतरण है दमिश्क़ के पूर्वी ओर निर्धारित किया गया और दमिश्क़ की तस्लीस को उसके पश्चिमी ओर रखा और इस प्रकार आने वाले युग के सम्बन्ध में यह भविष्यवाणी की कि जब मसीह मौऊद आएगा तो सूर्य की भांति जो पूर्व से निकलता है प्रकटन करेगा और उसके मुक़ाबले पर तस्लीस का मुर्दा चिराग़ जो पश्चिमी की ओर स्थित है दिन प्रतिदिन मृत होता जाएगा क्योंकि पूर्व से निकलना ख़ुदा की पुस्तकों से बुलंदी की निशानी बताई गई है और पश्चिम की ओर जाना गिरावट की निशानी।"

(मज्मूआ इश्तिहारात, भाग तृतीय, पृष्ठ 287 से 294)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad